CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2023 with Solution PDF-Set 2/5/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 13 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 1 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(a). प्रतीक्षा की
बहुत जोही बाट
जेठ बीता, हुई वर्षा नहीं, नभ यों रहा खल्वाट
आज है आषाढ़ वदि षष्ठी
उठा था ज़ोर का तूफ़ान
उसके बाद
सघन काली घन घटा से
हो रहा आच्छन्न यह आकाश
आज होगी, सजनि, वर्षा-हो रहा विश्वास
हो रही है अवनि पुलकित, ले रही नि:श्वास
किंतु अपने देश में तो
सुमुखि, वर्षा हुई होगी एक क्या, कै बार
गा रहे होंगे मुदित हो लोग ख़ूब मलार
भर गई होगी अरे वह वाग्मती की धार
उगे होंगे पोखरों में कुमुद पद्म मखान
आँख मूँदे कर रहा मैं ध्यान
लिखूँ क्या प्रेयसि, यहाँ का हाल
सामने ही बह रही भागीरथी, बस यही है कल्याण
जिस किसी भाँति गर्मी से बचे हैं प्राण
आज उमड़ी घन घटा को देख
मन यही करता कि मैं भी, प्रियतमे, उसका करूँ आह्वान
– कालिदास समान
सामने सरपट पड़ा मैदान
है न हरियाली किसी भी ओर
तृण-लता तरुहीन
नग्न प्रांतर देख
उठ रहा सिर में बड़ा ही दर्द
हरा धुँधला या कि नीला –
आ रहा चश्मा न कोई काम
किंतु मुझको हो रहा विश्वास
यहाँ भी बादल बरसने जा रहा है आज
अब न सिर में उठेगा फिर दर्द
गंगा नहाते वक़्त
आया ख्याल
हिमालय में गल रही है बर्फ़ :
आज होगा ग्रीष्म ऋतु का अंत [5 अंक]

1(a)(i). 'आज वर्षा होगी' कवि के इस अति विश्वास का आधार क्या है ? [1 अंक]

(A) जेठ मास का समाप्त होना

(B) आषाढ़ मास का आगमन

(C) धरती का प्रसन्न होना

(D) आकाश में काले बादलों का घिर आना

सही उत्तर: (D) आकाश में काले बादलों का घिर आना

हल:

अवधारणा:

- काले बादलों का घिरना वर्षा का प्रत्यक्ष संकेत है।

चरण 1: पंक्तियों से आधार पहचानें कवि कहता है कि तूफ़ान के बाद सघन काली घटा से आकाश ढक रहा है। इसी दृश्य के तुरंत बाद वह वर्षा होने का विश्वास प्रकट करता है। अतः विश्वास का आधार आकाश में घिरे काले बादल हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण करें जेठ का बीतना और आषाढ़ का आना समय के संकेत हैं; उनसे अकेले वर्षा निश्चित नहीं होती। धरती का प्रसन्न होना वर्षा की संभावना से उत्पन्न प्रतिक्रिया है। इसलिए (A), (B) और (C) की अपेक्षा (D) कविता के प्रत्यक्ष प्रमाण से मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है — आकाश में काले बादलों का घिर आना।

त्वरित सुझाव: विश्वास या अनुमान का आधार पूछे जाने पर उसके ठीक पहले दिया गया दृश्य-संकेत खोजें।

1(a)(ii). 'उठ रहा सिर में बड़ा ही दर्द' – पंक्ति के संदर्भ में कवि के सिर में उठने वाले दर्द का कारण क्या है ? [1 अंक]

(A) उसके स्वास्थ्य का ठीक न होना

(B) समय पर वर्षा न होना

(C) हरियाली विहीन प्रांतर का होना

(D) भागीरथी में पानी कम होना

सही उत्तर: (C) हरियाली विहीन प्रांतर का होना

हल:

अवधारणा:

- कारण का निर्धारण संबंधित पंक्ति के निकट के दृश्य-वर्णन से किया जाता है।

चरण 1: दर्द का प्रसंग समझें कवि सामने के मैदान को हरियाली रहित, तृण-लता और वृक्षों से विहीन बताता है। इसके बाद वह नग्न प्रांतर देखकर सिर में दर्द उठने की बात कहता है। इसलिए दर्द का सीधा संबंध हरियाली-विहीन दृश्य से है।

चरण 2: अन्य कारणों को अलग करें कविता में कवि के बीमार होने का उल्लेख नहीं है, इसलिए (A) उचित नहीं है। वर्षा का विलंब व्यापक पृष्ठभूमि है, पर इस पंक्ति का तत्काल कारण (B) नहीं है। भागीरथी में पानी कम होने की बात कही ही नहीं गई; इसलिए (D) भी निराधार है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) है — हरियाली विहीन प्रांतर का होना।

त्वरित सुझाव: किसी पंक्ति का कारण पूछने पर सामान्य परिस्थिति से पहले उसके निकट का स्पष्ट कथन देखें।

1(a)(iii). 'हो रहा आच्छन्न यह आकाश' – पंक्ति में 'आच्छन्न' शब्द का अर्थ है – [1 अंक]

(A) दबा हुआ

(B) ढका हुआ

(C) फैला हुआ

(D) बिखरा हुआ

सही उत्तर: (B) ढका हुआ

हल:

अवधारणा:

- शब्द का अर्थ उसके वाक्य और प्रसंग के अनुसार निर्धारित होता है।

चरण 1: प्रसंग के अनुसार अर्थ निकालें सघन काली घनघटा के वर्णन में आकाश के आच्छन्न होने की बात कही गई है। बादलों ने आकाश को ढक लिया है, इसलिए यहाँ आच्छन्न का अर्थ ढका हुआ है। यह अर्थ पूरे दृश्य को स्पष्ट करता है।

चरण 2: विकल्पों में अंतर पहचानें दबा हुआ (A) किसी वस्तु के दबाव में होने का अर्थ देता है। फैला हुआ (C) विस्तार और बिखरा हुआ (D) अलग-अलग फैलाव को बताता है। यहाँ आकाश के ऊपर बादलों का आवरण है; इसलिए ये तीनों अर्थ उपयुक्त नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है — ढका हुआ।

त्वरित सुझाव: शब्दार्थ चुनते समय विकल्प के शब्द को मूल पंक्ति में रखकर पूरे वाक्य का अर्थ जाँचें।

1(a)(iv). शहरी मैदान को कवि ने 'नग्न' क्यों कहा है ? [1 अंक]

(A) तृण विहीन होने के कारण

(B) लता विहीन होने के कारण

(C) तरुहीन होने के कारण

(D) वनस्पतिहीन होने के कारण

सही उत्तर: (D) वनस्पतिहीन होने के कारण

हल:

अवधारणा:

- काव्य में दृश्य के समग्र आशय को समझने के लिए पास की सभी विशेषताओं को साथ पढ़ना चाहिए।

चरण 1: नग्न प्रांतर का अर्थ समझें कवि मैदान में किसी ओर हरियाली नहीं देखता। वह उसे तृण, लता और तरु से हीन बताता है। इन सभी वनस्पतियों के अभाव से मैदान खुला और सूना दिखता है; इसी कारण उसे नग्न कहा गया है।

चरण 2: आंशिक और समग्र विकल्प परखें विकल्प (A) केवल घास के अभाव, (B) केवल लताओं के अभाव तथा (C) केवल वृक्षों के अभाव को बताता है। कविता में तीनों का अभाव एक साथ है। वनस्पतिहीन शब्द उन सबको समेटता है, इसलिए (D) सबसे पूर्ण और सटीक उत्तर है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है — वनस्पतिहीन होने के कारण।

त्वरित सुझाव: जब कविता कई वस्तुओं का अभाव गिनाए, तो उन सभी को समेटने वाला विकल्प चुनें।

1(a)(v). 'हो रही अवनि पुलकित, ले रही नि:श्वास' – काव्य पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ? [1 अंक]

(A) अनुप्रास

(B) रूपक

(C) यमक

(D) मानवीकरण

सही उत्तर: (D) मानवीकरण

हल:

अवधारणा:

- उत्तर चुनते समय पाठ के प्रसंग और प्रश्न में पूछे गए विशेष अर्थ को आधार बनाना चाहिए।
- दिए गए सभी विकल्पों की तुलना करके पाठ से सीधे समर्थित विकल्प का चयन करना चाहिए।

चरण 1: पाठ के संकेत को समझना अवनि अर्थात् पृथ्वी को पुलकित होते और नि:श्वास लेते दिखाया गया है। पुलक और साँस लेना मनुष्य की अनुभूतियाँ तथा क्रियाएँ हैं। प्रकृति पर इन मानवीय क्रियाओं का आरोप होने से पंक्ति का सौंदर्य बनता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच अनुप्रास में वर्ण की आवृत्ति, रूपक में उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप और यमक में एक शब्द के भिन्न अर्थ अपेक्षित होते हैं। यहाँ निर्णायक बात इनकी नहीं, पृथ्वी का मानव जैसा व्यवहार है। इसलिए (A), (B) और (C) इस पंक्ति के प्रधान अलंकार नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति में मानवीकरण अलंकार है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: निर्जीव पृथ्वी के साथ पुलकित होने और साँस लेने की क्रियाएँ देखें; मानवीय क्रिया अलंकार पहचानने की कुंजी है।

अथवा

1(b). मैं भी अगर एक छोटा पंछी होता
तो बस्ती-बस्ती में फिरता रहता
सुंदर नद-नालों का यार होता
मस्ती में अपनी झूमता रहता। मैं भी अगर .....
आदमी का गुण मुझ में न होता
ईर्ष्या की आग में न जलता होता
स्वार्थ के युद्ध में न मरता-मारता
बंब-मिसाइल की वर्षा न करता। मैं भी अगर .....
आँख में दौलत का काजल न पुतता
शान के लिए पराया माल न हड़पता
हर मानव मेरा हित-बंदु होता
रंग-रूप पर अपना गर्व न करता। मैं भी अगर .....
तब सारा जग मेरा अपना होता
पासपोर्ट-वीज़ा कोई न खोजता
स्वच्छन्द वन-वन में घूमता होता
विश्व-भर में मेरा अपना राज्य होता। मैं भी अगर .....
प्यार के गीत जन-जन को सुनाता
आवाज से अपनी सब को लुभाता
मानवता की वेदी पर सिर झुकाता
सागर-उर्मिल का झूला झुलाता
मैं भी अगर एक छोटा पंछी होता।। [5 अंक]

1(b)(i). पंछी के रूप में कवि की क्या अभिलाषा है ? [1 अंक]

(A) समस्त विश्व पर राज्य करने की

(B) समस्त विश्व का भ्रमण करने की

(C) समस्त विश्व में प्रेम-प्रसार करने की

(D) समस्त वन-प्रदेश में स्वतंत्र घूमने की

सही उत्तर: (C) समस्त विश्व में प्रेम-प्रसार करने की

हल:

अवधारणा:

- उत्तर चुनते समय पाठ के प्रसंग और प्रश्न में पूछे गए विशेष अर्थ को आधार बनाना चाहिए।
- दिए गए सभी विकल्पों की तुलना करके पाठ से सीधे समर्थित विकल्प का चयन करना चाहिए।

चरण 1: पाठ के संकेत को समझना कवि की अभिलाषा का स्पष्ट संकेत कविता की पंक्ति 'प्यार के गीत जन-जन को सुनाता' में मिलता है। वह पंछी बनकर मनुष्यों के बीच प्रेम और अपनापन फैलाना चाहता है। उसका स्वप्न मानवता के प्रति समर्पण से जुड़ा है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच समस्त विश्व पर राज्य करना (A) अधिकार का भाव देता है, जबकि कविता का लक्ष्य प्रेम है। विश्व-भ्रमण (B) तथा वन-प्रदेश में स्वतंत्र घूमना (D) पक्षी की स्वतंत्रता से जुड़ी स्थितियाँ हैं, पर वे कवि की व्यापक मानवीय अभिलाषा का पूरा अर्थ नहीं बताते।

चरण 3: निष्कर्ष कवि समस्त विश्व में प्रेम-प्रसार करना चाहता है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: अभिलाषा पूछे जाने पर प्यार के गीत जन-जन को सुनाने वाली पंक्ति देखें; घूमने के साधन और प्रेम के लक्ष्य में अंतर करें।

1(b)(ii). 'आदमी का गुण मुझमें होता' – पंक्ति में निहितार्थ 'गुण' से कवि का अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) आदमी में विद्यमान अवगुण

(B) आदमी में विद्यमान अच्छाइयाँ

(C) आदमी में विद्यमान मानवता की भावना

(D) आदमी में विद्यमान परोपकार की भावना

सही उत्तर: (A) आदमी में विद्यमान अवगुण

हल:

अवधारणा:

- उत्तर चुनते समय पाठ के प्रसंग और प्रश्न में पूछे गए विशेष अर्थ को आधार बनाना चाहिए।
- दिए गए सभी विकल्पों की तुलना करके पाठ से सीधे समर्थित विकल्प का चयन करना चाहिए।

चरण 1: पाठ के संकेत को समझना 'आदमी का गुण मुझ में न होता' के तुरंत बाद कवि ईर्ष्या, स्वार्थ, युद्ध और बम-मिसाइल की वर्षा का उल्लेख करता है। इस संदर्भ में 'गुण' शब्द प्रशंसा के लिए नहीं, मनुष्य की बुराइयों पर व्यंग्य करने के लिए आया है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच इसलिए अच्छाइयाँ (B), मानवता की भावना (C) और परोपकार की भावना (D) यहाँ अभिप्रेत नहीं हैं। ये सकारात्मक भाव हैं, जबकि कवि उन दुर्गुणों से मुक्त होना चाहता है जो मनुष्य को हिंसा और लोभ की ओर ले जाते हैं। अर्थ का निर्णय अगली पंक्तियों से होता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'गुण' से अभिप्राय आदमी में विद्यमान अवगुण हैं। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: गुण शब्द के तुरंत बाद आए ईर्ष्या और युद्ध जैसे शब्द पढ़ें; संदर्भ सकारात्मक शब्द का व्यंग्यात्मक अर्थ खोलता है।

1(b)(iii). प्रस्तुत काव्यांश में कवि समर्थक है – [1 अंक]

(A) भ्रमण, हिंसा, भ्रष्टाचार और अहंकार का

(B) भ्रमण, अहिंसा, ईमानदारी और शानो-शौकत का

(C) शांति, हिंसा, ईमानदारी और शानो-शौकत का

(D) शांति, अहिंसा, ईमानदारी और विश्व-बंधुत्व का

सही उत्तर: (D) शांति, अहिंसा, ईमानदारी और विश्व-बंधुत्व का

हल:

अवधारणा:

- उत्तर चुनते समय पाठ के प्रसंग और प्रश्न में पूछे गए विशेष अर्थ को आधार बनाना चाहिए।
- दिए गए सभी विकल्पों की तुलना करके पाठ से सीधे समर्थित विकल्प का चयन करना चाहिए।

चरण 1: पाठ के संकेत को समझना कवि युद्ध और बम-मिसाइल का विरोध करके शांति तथा अहिंसा की कामना करता है। 'पराया माल न हड़पता' में ईमानदारी का समर्थन है। 'हर मानव मेरा हित-बंदु होता' में सबको अपना मानने वाला विश्व-बंधुत्व व्यक्त हुआ है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (A) में हिंसा, भ्रष्टाचार और अहंकार कविता के विरोधी मूल्य हैं। (B) में शानो-शौकत का समर्थन नहीं मिलता। (C) में हिंसा तथा शानो-शौकत दोनों कविता के भाव के विपरीत हैं। केवल (D) के सभी मूल्य कविता की पंक्तियों से पुष्ट होते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कवि शांति, अहिंसा, ईमानदारी और विश्व-बंधुत्व का समर्थक है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: हर विकल्प के चारों मूल्यों को कविता से मिलाएँ; हिंसा या शानो-शौकत वाला विकल्प तुरंत अलग करें।

1(b)(iv). 'स्वच्छन्द वन-वन में घूमता होता' पंक्ति में आए 'स्वच्छन्द' शब्द का पर्यायवाची नहीं है – [1 अंक]

(A) आज़ाद

(B) निरंकुश

(C) मुक्त

(D) नियंत्रित

सही उत्तर: (D) नियंत्रित

हल:

अवधारणा:

- उत्तर चुनते समय पाठ के प्रसंग और प्रश्न में पूछे गए विशेष अर्थ को आधार बनाना चाहिए।
- दिए गए सभी विकल्पों की तुलना करके पाठ से सीधे समर्थित विकल्प का चयन करना चाहिए।

चरण 1: पाठ के संकेत को समझना 'स्वच्छन्द वन-वन में घूमता होता' में स्वच्छन्द का आशय बिना बंधन या रोक-टोक के स्वतंत्र घूमने से है। कविता में पासपोर्ट-वीज़ा की बाधा न होने की इच्छा भी इस स्वतंत्रता के अर्थ को स्पष्ट करती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच आज़ाद (A) और मुक्त (C) स्वतंत्रता के समान भाव वाले शब्द हैं। निरंकुश (B) का अर्थ भी अंकुश या नियंत्रण से रहित है, यद्यपि उसका प्रयोग नकारात्मक भाव में भी होता है। नियंत्रित (D) का अर्थ नियंत्रण में रखा गया है, इसलिए यह स्वच्छन्द का पर्याय नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष 'नियंत्रित' स्वच्छन्द का पर्यायवाची नहीं है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: नहीं शब्द को पहले चिह्नित करें; स्वच्छन्द का अर्थ स्वतंत्र रखकर नियंत्रण वाले शब्द को पहचानें।

1(b)(v). **'सागर-उर्मिल का झूला झुलाता है' – पंक्ति के रेखांकित अंश में कौन-सा अलंकार है ?** [1 अंक]

(A) रूपक

(B) उत्प्रेक्षा

(C) मानवीकरण

(D) अतिश्योक्ति

सही उत्तर: (A) रूपक

हल:

अवधारणा:

- उत्तर चुनते समय पाठ के प्रसंग और प्रश्न में पूछे गए विशेष अर्थ को आधार बनाना चाहिए।
- दिए गए सभी विकल्पों की तुलना करके पाठ से सीधे समर्थित विकल्प का चयन करना चाहिए।

चरण 1: पाठ के संकेत को समझना रेखांकित 'सागर-उर्मिल' को झूले का रूप दिया गया है। सागर की लहरों की झूलने जैसी गति के आधार पर कवि ने उन्हें झूले के रूप में प्रस्तुत किया है। उपमेय और उपमान का यह अभेद चित्रण रूपक की पहचान है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच उत्प्रेक्षा (B) में संभावना व्यक्त करने वाले मानो या जैसे भाव की प्रधानता होती है, जो यहाँ नहीं है। मानवीकरण (C) का निर्णय किसी मानवीय क्रिया के आरोप से होता है; प्रश्न विशेष रूप से रेखांकित अंश पर है। अतिशयोक्ति (D) में अत्यधिक बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन होता है, जो यहाँ मुख्य आधार नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष रेखांकित अंश में रूपक अलंकार है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: रेखांकित अंश पर ध्यान दें; लहरों को झूला मानने के अभेद संबंध से रूपक पहचानें।

---

2. सनातन काल से ही भारत में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिए योग द्वारा शरीर, मन और मस्तिष्क को पुष्ट किए जाने का उल्लेख मिलता है। इसलिए लोग नीरोग और दीर्घजीवी होते थे।

भारतीय संस्कृति और दर्शन किसी देश या जाति के लिए नहीं, अपितु समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए है। अत: भारतीय संस्कृति को सच्चे अर्थ में मानवता की संस्कृति कहा जा सकता है। योग हमें वैज्ञानिकता के साथ समग्र जीवन-शैली के प्रति जागरूक करता है, जिससे जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। साथ ही, इससे न केवल शांतिप्रिय जीवन पद्धति को बढ़ावा मिलता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति के साथ मानवतापूर्ण संबंध स्थापित करने का संदेश भी प्राप्त होता है। भारत ने योग को हमेशा से सीमा, संस्कृति और भाषा से ऊपर रखा है। इसे यदि सही तरीके से समझा जाए और नियमित अभ्यास किया जाए, तो कई समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है। 'योग' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'युज्' शब्द से हुई है, जिसका तात्पर्य जोड़ना एवं एकीकरण करने से है। आध्यात्मिक स्तर पर जुड़ने का अर्थ है, आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन और व्यावहारिक स्तर पर योग को शरीर, मन और भावनाओं को संतुलित करने तथा सामंजस्य बनाए रखने का एक साधन माना जाता है।

कोरोना काल में न केवल भारत, बल्कि वैश्विक स्तर पर सभी ने योग की महत्ता को देखा और जाना कि योग तनाव घटाता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। यह प्राचीन विद्या है और जीवन को नीरोगी रखने की एक दिव्य विद्या है। कोरोना काल में हम सभी ने अनुभव किया है कि योग हमें भयमुक्त, भाव में जीना सिखाता है। योग स्वस्थ और सुखी रहने के लिए अद्भुत प्रभावी विधि है, इसलिए घर-घर, हर घट, हर घाट पर योग होना चाहिए। योग सदाबहार है, रामबाण है, योग संजीवनी है। योग से तन स्वस्थ और मन विकार-मुक्त होता है। हम योग को एक टोल फ्री नम्बर की तरह उपयोग कर सकते हैं। जिस प्रकार टोल फ्री नम्बर को कोई भी, कहीं से, कभी भी डायल कर सकता है, उसी प्रकार योग भी है। जब तन-मन के लिए सच्चे मन से जागिए, तभी योग साकार हो जाता है। योग के माध्यम से हम जितने गहरे उतरेंगे, उतने शांत होंगे और पाएँगे कि अशांत करने वाले सारे तत्त्वों की धीरे-धीरे पहचान हो रही है और घने अंधेरे की जगह प्रकाश ले रहा है तथा जीवन निरंतर आनंदमय हो रहा है। समस्या शारीरिक हो या फिर पर्यावरण की, इनका समाधान है योग। आज बढ़ते प्रदूषण का समाधान केवल प्रकृतिमय जीवन पद्धति और सतत तथा सुरक्षित विकास में निहित है। यह संदेश योग के माध्यम से जीवन में आता है। अत: योग को आत्मसात कर हम स्वस्थ प्रकृतिमय जीवन जी सकते हैं। [10 अंक]

2(i). भारतीय संस्कृति को मानवता की संस्कृति कहे जाने का क्या आधार है ? [1 अंक]

(A) समस्त मानव जाति को आश्रय देने की भावना

(B) संसार की सबसे प्राचीन संस्कृति होना

(C) समस्त मानव जाति के प्रति कल्याण की भावना

(D) समस्त मानव जाति को योग की शिक्षा देना

सही उत्तर: (C) समस्त मानव जाति के प्रति कल्याण की भावना

हल:

अवधारणा:

- उत्तर चुनते समय पाठ के प्रसंग और प्रश्न में पूछे गए विशेष अर्थ को आधार बनाना चाहिए।
- दिए गए सभी विकल्पों की तुलना करके पाठ से सीधे समर्थित विकल्प का चयन करना चाहिए।

चरण 1: पाठ के संकेत को समझना गद्यांश में कहा गया है कि भारतीय संस्कृति और दर्शन किसी देश या जाति के लिए नहीं, अपितु 'समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए' हैं। इसी कथन के बाद भारतीय संस्कृति को मानवता की संस्कृति कहा गया है। इसलिए आधार उसका सार्वभौम कल्याणकारी दृष्टिकोण है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच आश्रय देना (A) पाठ में इस निष्कर्ष का कारण नहीं है। सबसे प्राचीन होना (B) संस्कृति की आयु से संबंधित है, मानवता के कल्याण से नहीं। योग की शिक्षा देना (D) संस्कृति के एक पक्ष तक सीमित है। (C) में वही व्यापक भावना दी गई है जिसे गद्यांश सीधे व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष आधार समस्त मानव जाति के प्रति कल्याण की भावना है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: मानवता की संस्कृति वाले कथन से ठीक पहले की पंक्ति पढ़ें; समस्त मानव जाति का कल्याण निर्णायक आधार है।

2(ii). आध्यात्मिक स्तर पर योग साधन है – [1 अंक]

(A) आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन का

(B) आत्मा का शरीर और मन से मिलन का

(C) आत्मा का मन और मस्तिष्क से मिलन का

(D) आत्मा का व्यक्ति और समाज से मिलन का

सही उत्तर: (A) आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन का

हल:

अवधारणा:

- उत्तर चुनते समय पाठ के प्रसंग और प्रश्न में पूछे गए विशेष अर्थ को आधार बनाना चाहिए।
- दिए गए सभी विकल्पों की तुलना करके पाठ से सीधे समर्थित विकल्प का चयन करना चाहिए।

चरण 1: पाठ के संकेत को समझना गद्यांश योग के दो स्तर अलग करता है। आध्यात्मिक स्तर पर जुड़ने का अर्थ 'आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन' बताया गया है। प्रश्न इसी स्तर के बारे में है, इसलिए उत्तर इसी स्पष्ट कथन से चुना जाएगा।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच शरीर, मन और भावनाओं में संतुलन व्यावहारिक स्तर से संबंधित है। अतः आत्मा का शरीर और मन से मिलन (B) तथा मन और मस्तिष्क से मिलन (C) आध्यात्मिक अर्थ के सही कथन नहीं हैं। व्यक्ति और समाज से मिलन (D) भी यहाँ नहीं कहा गया है। (A) पाठ के शब्दों से सीधा मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष आध्यात्मिक स्तर पर योग आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन का साधन है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में आध्यात्मिक स्तर को चिह्नित करें; शरीर और मन का संतुलन व्यावहारिक स्तर में आता है।

2(iii). कोरोना काल में लोगों को किसके महत्त्व का ज्ञान हुआ ? [1 अंक]

(A) अच्छे स्वास्थ्य का

(B) योग के महत्त्व का

(C) चिकित्सकों का

(D) पेड़-पौधों का

सही उत्तर: (B) योग के महत्त्व का

हल:

अवधारणा:

- उत्तर चुनने के लिए गद्यांश में प्रश्न से संबंधित कथन और उसका संदर्भ पहचानना आवश्यक है।
- विकल्प का अर्थ पाठ में कही गई बात से मिलना चाहिए; सामान्य जानकारी या अत्यधिक व्यापक दावा पर्याप्त आधार नहीं है।

चरण 1: गद्यांश का आधार पहचानें गद्यांश स्पष्ट कहता है कि कोरोना काल में भारत ही नहीं, वैश्विक स्तर पर सभी ने योग की महत्ता को देखा और जाना। इसके बाद तनाव कम होने और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ने का उल्लेख इसी महत्त्व को समझाता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें अच्छा स्वास्थ्य (A) योग का लाभ है, पर प्रश्न जिस महत्त्व की पहचान पूछता है, उसका सीधा नाम योग है। चिकित्सकों (C) और पेड़-पौधों (D) के महत्त्व का ज्ञान होने की बात इस प्रसंग में नहीं कही गई है।

चरण 3: निष्कर्ष कोरोना काल में लोगों को योग के महत्त्व का ज्ञान हुआ। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश में खोजकर उसके पहले और बाद का वाक्य पढ़ें; उसी सीमा में सही विकल्प चुनें।

2(iv). योग को संजीवनी क्यों कहा गया है ? [1 अंक]

(A) विश्व में भारत की पहचान बनाने के कारण

(B) संसार की प्राचीनतम विद्या होने के कारण

(C) ऋषि-मुनियों द्वारा महत्त्व दिए जाने के कारण

(D) शरीर को स्वस्थ बनाने के महत्त्व के कारण

सही उत्तर: (D) शरीर को स्वस्थ बनाने के महत्त्व के कारण

हल:

अवधारणा:

- उत्तर चुनने के लिए गद्यांश में प्रश्न से संबंधित कथन और उसका संदर्भ पहचानना आवश्यक है।
- विकल्प का अर्थ पाठ में कही गई बात से मिलना चाहिए; सामान्य जानकारी या अत्यधिक व्यापक दावा पर्याप्त आधार नहीं है।

चरण 1: गद्यांश का आधार पहचानें गद्यांश में योग को स्वस्थ और सुखी रहने की अद्भुत प्रभावी विधि बताया गया है। इसी संदर्भ में उसे सदाबहार, रामबाण और संजीवनी कहा गया है। आगे तन के स्वस्थ और मन के विकार-मुक्त होने का उल्लेख इस अर्थ की पुष्टि करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें भारत की पहचान (A), प्राचीनतम विद्या होना (B) और ऋषि-मुनियों का महत्त्व देना (C) संजीवनी कहने का तात्कालिक आधार नहीं हैं। यहाँ संजीवनी का आशय जीवन में स्वास्थ्य और स्फूर्ति लाने वाले प्रभाव से है।

चरण 3: निष्कर्ष शरीर को स्वस्थ बनाने के महत्त्व के कारण योग को संजीवनी कहा गया है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश में खोजकर उसके पहले और बाद का वाक्य पढ़ें; उसी सीमा में सही विकल्प चुनें।

2(ix). योग शरीर को स्वस्थ रखने के साथ-साथ प्रेरणा भी देता है – [1 अंक]

(A) सादा जीवन उच्च विचार रखने का

(B) समस्त विश्व को परस्पर जोड़ने का

(C) समस्त मानव मात्र के कल्याण का

(D) प्रकृतिमय जीवन-पद्धति अपनाने का

सही उत्तर: (D) प्रकृतिमय जीवन-पद्धति अपनाने का

हल:

अवधारणा:

- उत्तर चुनने के लिए गद्यांश में प्रश्न से संबंधित कथन और उसका संदर्भ पहचानना आवश्यक है।
- विकल्प का अर्थ पाठ में कही गई बात से मिलना चाहिए; सामान्य जानकारी या अत्यधिक व्यापक दावा पर्याप्त आधार नहीं है।

चरण 1: गद्यांश का आधार पहचानें गद्यांश के अंत में बढ़ते प्रदूषण का समाधान प्रकृतिमय जीवन-पद्धति तथा सतत और सुरक्षित विकास में बताया गया है। लेखक कहता है कि यह संदेश योग के माध्यम से जीवन में आता है और योग को अपनाकर हम स्वस्थ प्रकृतिमय जीवन जी सकते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें सादा जीवन उच्च विचार (A) इस रूप में गद्यांश का कथन नहीं है। विश्व को जोड़ना (B) और मानव-कल्याण (C) व्यापक विचार हैं, पर यहाँ स्वास्थ्य के साथ मिलने वाली जिस प्रेरणा का स्पष्ट उल्लेख है, वह प्रकृतिमय जीवन-पद्धति है।

चरण 3: निष्कर्ष योग प्रकृतिमय जीवन-पद्धति अपनाने की प्रेरणा देता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश में खोजकर उसके पहले और बाद का वाक्य पढ़ें; उसी सीमा में सही विकल्प चुनें।

2(v). टोल फ्री नंबर से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) संचार-सेवा के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर

(B) मनोरंजन के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर

(C) खरीददारी के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर

(D) शिकायत दर्ज कराने के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर

सही उत्तर: (A) संचार-सेवा के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर

हल:

अवधारणा:

- उत्तर चुनने के लिए गद्यांश में प्रश्न से संबंधित कथन और उसका संदर्भ पहचानना आवश्यक है।
- विकल्प का अर्थ पाठ में कही गई बात से मिलना चाहिए; सामान्य जानकारी या अत्यधिक व्यापक दावा पर्याप्त आधार नहीं है।

चरण 1: गद्यांश का आधार पहचानें टोल फ्री नंबर ऐसा फोन नंबर होता है जिस पर संपर्क करने के लिए फोन करने वाले को शुल्क नहीं देना पड़ता। गद्यांश में उसकी सुगम उपलब्धता की तुलना योग से की गई है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति कहीं से और कभी भी उसका उपयोग कर सकता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें मनोरंजन (B), खरीददारी (C) और शिकायत दर्ज कराना (D) संचार के अलग-अलग प्रयोजन हो सकते हैं। ये टोल फ्री नंबर के अर्थ को केवल एक उपयोग तक सीमित करते हैं। सामान्य अर्थ में वह संचार-सेवा के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर है।

चरण 3: निष्कर्ष टोल फ्री नंबर से अभिप्राय संचार-सेवा के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश में खोजकर उसके पहले और बाद का वाक्य पढ़ें; उसी सीमा में सही विकल्प चुनें।

2(vi). योग और टोल फ्री नंबर में क्या समानता नहीं है ? [1 अंक]

(A) दोनों का लाभ सबके द्वारा प्राप्त किया जा रहा है।

(B) दोनों का लाभ कभी भी प्राप्त किया जा सकता है।

(C) दोनों का लाभ कोई भी प्राप्त कर सकता है।

(D) दोनों का लाभ कहीं भी प्राप्त किया जा सकता है।

सही उत्तर: (A) दोनों का लाभ सबके द्वारा प्राप्त किया जा रहा है।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर चुनने के लिए गद्यांश में प्रश्न से संबंधित कथन और उसका संदर्भ पहचानना आवश्यक है।
- विकल्प का अर्थ पाठ में कही गई बात से मिलना चाहिए; सामान्य जानकारी या अत्यधिक व्यापक दावा पर्याप्त आधार नहीं है।

चरण 1: गद्यांश का आधार पहचानें गद्यांश में कहा गया है कि टोल फ्री नंबर को कोई भी, कहीं से, कभी भी डायल कर सकता है और इसी प्रकार योग भी सबके लिए सुलभ है। यहाँ उपयोग कर सकने की संभावना बताई गई है; यह नहीं कहा गया कि सभी लोग वास्तव में दोनों का उपयोग कर ही रहे हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें कभी भी लाभ मिल सकना (B), किसी भी व्यक्ति का लाभ ले सकना (C) और कहीं भी लाभ ले सकना (D) इसी तुलना के अंग हैं। विकल्प (A) सबके द्वारा लाभ प्राप्त किए जाने को घटित तथ्य मानता है, जिसकी पुष्टि गद्यांश नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष दोनों का लाभ सबके द्वारा प्राप्त किया जा रहा है, यह समानता नहीं बताई गई है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश में खोजकर उसके पहले और बाद का वाक्य पढ़ें; उसी सीमा में सही विकल्प चुनें।

2(vii). गद्यांश के आधार पर प्राचीनकाल में लोगों के नीरोग और दीर्घजीवी होने का क्या कारण था ? [1 अंक]

(A) शुद्ध सात्विक भोजन ग्रहण करना

(B) शुद्ध प्राकृतिक वातावरण का होना

(C) खूब शारीरिक परिश्रम करना

(D) योग को जीवन का प्रमुख अंग बनाना

सही उत्तर: (D) योग को जीवन का प्रमुख अंग बनाना

हल:

अवधारणा:

- उत्तर चुनने के लिए गद्यांश में प्रश्न से संबंधित कथन और उसका संदर्भ पहचानना आवश्यक है।
- विकल्प का अर्थ पाठ में कही गई बात से मिलना चाहिए; सामान्य जानकारी या अत्यधिक व्यापक दावा पर्याप्त आधार नहीं है।

चरण 1: गद्यांश का आधार पहचानें गद्यांश के आरंभ में योग द्वारा शरीर, मन और मस्तिष्क को पुष्ट किए जाने का उल्लेख है। इसके तुरंत बाद कहा गया है कि इसलिए लोग नीरोग और दीर्घजीवी होते थे। इस प्रकार नीरोगता तथा दीर्घायु का कारण नियमित जीवन में योग का स्थान है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें सात्विक भोजन (A), शुद्ध प्राकृतिक वातावरण (B) और खूब शारीरिक परिश्रम (C) सामान्यतः स्वास्थ्य से जुड़े विचार हो सकते हैं। किंतु इस प्रश्न में केवल गद्यांश का आधार लेना है, और उस स्थान पर लेखक ने इन कारणों का उल्लेख नहीं किया है।

चरण 3: निष्कर्ष योग को जीवन का प्रमुख अंग बनाना प्राचीनकाल में लोगों के नीरोग और दीर्घजीवी होने का कारण था। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश में खोजकर उसके पहले और बाद का वाक्य पढ़ें; उसी सीमा में सही विकल्प चुनें।

2(viii). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

(क) योग तनाव घटाता है।

(ख) रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।

(ग) योग सभी समस्याओं का समाधान है।

ऊपर लिखित कथनों में से कौन सा / कौन से सही है / हैं ? [1 अंक]

(A) केवल (क)

(B) केवल (ग)

(C) (क) और (ख)

(D) (ख) और (ग)

सही उत्तर: (C) (क) और (ख)

हल:

अवधारणा:

- उत्तर चुनने के लिए गद्यांश में प्रश्न से संबंधित कथन और उसका संदर्भ पहचानना आवश्यक है।
- विकल्प का अर्थ पाठ में कही गई बात से मिलना चाहिए; सामान्य जानकारी या अत्यधिक व्यापक दावा पर्याप्त आधार नहीं है।

चरण 1: गद्यांश का आधार पहचानें कोरोना काल वाले अनुच्छेद में स्पष्ट कहा गया है कि योग तनाव घटाता और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। इसलिए कथन (क) और (ख) दोनों सीधे गद्यांश से पुष्ट होते हैं। दोनों को साथ रखने वाला विकल्प तलाशना चाहिए।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें कथन (ग) में सभी समस्याओं का समाधान होने का निरपेक्ष दावा है। गद्यांश कई समस्याओं और विशेषत: शारीरिक तथा पर्यावरण संबंधी समस्याओं की चर्चा करता है; इससे हर समस्या का समाधान सिद्ध नहीं होता। इसलिए (ग) पर आधारित (B) और (D) गलत हैं। (A) सही कथन (ख) को छोड़ देता है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन (क) और (ख) सही हैं। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश में खोजकर उसके पहले और बाद का वाक्य पढ़ें; उसी सीमा में सही विकल्प चुनें।

2(x). निम्नलिखित कथन, कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से एक सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कथन (A) : घर-घर, हर घट, हर घाट पर योग होना चाहिए।

कारण (R) : योग से तन स्वस्थ और मन विकार-मुक्त होता है। [1 अंक]

(A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(B) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

(C) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(D) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता पहले अलग-अलग जाँची जाती है।
- दोनों सही होने पर यह देखना आवश्यक है कि कारण कथन के समर्थन में उपयुक्त आधार देता है या नहीं।

चरण 1: कथन की सत्यता गद्यांश में योग को स्वस्थ और सुखी रहने के लिए प्रभावी विधि बताकर घर-घर, हर घट, हर घाट पर उसके

होने की बात कही गई है। इसलिए कथन (A) पाठ के अनुसार सही है। यह योग के व्यापक प्रसार और प्रत्येक व्यक्ति तक उसकी पहुँच की आवश्यकता व्यक्त करता है।

चरण 2: कारण की सत्यता गद्यांश स्पष्ट रूप से कहता है कि योग से तन स्वस्थ और मन विकार-मुक्त होता है। इसलिए कारण (R) भी सही है। यहाँ योग के शारीरिक और मानसिक दोनों लाभ बताए गए हैं, जिनसे व्यक्ति का जीवन बेहतर होता है।

चरण 3: व्याख्या का संबंध और विकल्प योग से प्रत्येक व्यक्ति को स्वास्थ्य और मानसिक शांति का लाभ मिल सकता है; यही उसके हर स्थान और हर व्यक्ति तक पहुँचने की आवश्यकता का आधार है। अतः कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (B) कथन को गलत तथा (C) दोनों को गलत बताता है। (D) उनके सही व्याख्यात्मक संबंध को अस्वीकार करता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: कथन में किए गए आग्रह का कारण खोजें; यहाँ तन-मन का लाभ योग को सर्वसुलभ बनाने के आग्रह को समझाता है।

3(i). मुद्रित माध्यमों की सीमा या कमजोरी के विषय में इनमें से कौन-सा कथन असत्य है ? [1 अंक]

(A) इसे आप धीरे-धीरे आराम से पढ़ सकते हैं।

(B) निरक्षरों के लिए मुद्रित माध्यम किसी काम के नहीं हैं।

(C) इसमें समाचारों को प्रकाशन के लिए स्वीकार करने की समय-सीमा होती है।

(D) इसमें अन्य संचार माध्यमों की तरह तुरंत घटी घटनाओं को नहीं प्रकाशित कर सकते।

सही उत्तर: (A) इसे आप धीरे-धीरे आराम से पढ़ सकते हैं।

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में सीमा या कमजोरी के विषय में असत्य कथन पहचानना है।
- सही उत्तर चुनने के लिए प्रश्न के निर्णायक शब्द और प्रत्येक विकल्प का आशय अलग-अलग परखा जाता है।

चरण 1: मुख्य तथ्य की पहचान धीरे-धीरे और अपनी सुविधा से पढ़ पाना मुद्रित माध्यम की विशेषता है। पाठक अपनी गति निर्धारित कर सकता है तथा किसी अंश को दोबारा पढ़ सकता है। इसलिए यह बात कमजोरी की सूची में नहीं आएगी।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण विकल्प (B) साक्षरता की आवश्यकता बताता है। विकल्प (C) प्रकाशन की समय-सीमा और विकल्प (D) तत्काल प्रसारण की असमर्थता बताते हैं। ये तीनों मुद्रित माध्यम की वास्तविक सीमाएँ हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : इसे आप धीरे-धीरे आराम से पढ़ सकते हैं।

त्वरित सुझाव: असत्य या नहीं जैसे निषेधसूचक शब्द पहले रेखांकित करें; यहाँ लाभ बताने वाला कथन चुनना है।

3(ii). वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय जाता है – [1 अंक]

(A) रीडिफ डॉट कॉम

(B) इंडिया इंफोलाइन

(C) सीफी डॉट कॉम

(D) तहलका डॉट कॉम

सही उत्तर: (D) तहलका डॉट कॉम

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न इंटरनेट पर समाचार देने और विशुद्ध पत्रकारिता आरंभ करने के बीच का अंतर जाँचता है।
- सही उत्तर चुनने के लिए प्रश्न के निर्णायक शब्द और प्रत्येक विकल्प का आशय अलग-अलग परखा जाता है।

चरण 1: मुख्य तथ्य की पहचान भारत में वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय तहलका डॉट कॉम को दिया जाता है। इसकी पहचान पत्रकारिता, विशेषकर खोजी समाचारों, को केंद्र में रखने वाली वेबसाइट के रूप में बनी।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण रीडिफ डॉट कॉम, इंडिया इंफोलाइन और सीफी डॉट कॉम इंटरनेट सेवाओं तथा विभिन्न प्रकार की सामग्री वाले पोर्टलों से जुड़े नाम हैं। प्रश्न सामान्य वेबसाइट या पोर्टल का नाम नहीं पूछता; विशुद्ध पत्रकारिता की शुरुआत पूछता है। इसलिए (A), (B) और (C) उपयुक्त नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है : तहलका डॉट कॉम।

त्वरित सुझाव: विशुद्ध पत्रकारिता शब्द पर ध्यान दें और उसका संबंध तहलका डॉट कॉम से जोड़कर याद रखें।

3(iii). तथ्यों या सूचनाओं को उनके घटते हुए महत्त्वपूर्ण क्रम में लिखना, कहलाता है – [1 अंक]

(A) उलटा पिरामिड शैली

(B) सीधा पिरामिड शैली

(C) कथात्मक शैली

(D) वर्णनात्मक शैली

सही उत्तर: (A) उलटा पिरामिड शैली

हल:

अवधारणा:

- समाचार लेखन में सूचनाओं का क्रम उनकी महत्ता के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- सही उत्तर चुनने के लिए प्रश्न के निर्णायक शब्द और प्रत्येक विकल्प का आशय अलग-अलग परखा जाता है।

चरण 1: मुख्य तथ्य की पहचान उलटा पिरामिड शैली में सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य आरंभ में दिए जाते हैं। उसके बाद अपेक्षाकृत कम महत्त्व की सूचनाएँ आती हैं। अंत में पृष्ठभूमि या अन्य सहायक विवरण रखे जाते हैं। यही घटते महत्त्व का क्रम है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण सीधा पिरामिड शैली में आरंभ से चरम बिंदु की ओर बढ़ने का क्रम होता है। कथात्मक शैली घटना को कथा की तरह प्रस्तुत करती है और वर्णनात्मक शैली विवरण पर बल देती है। इनमें घटते महत्त्व का क्रम निर्णायक परिभाषा नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : उलटा पिरामिड शैली।

त्वरित सुझाव: सबसे जरूरी बात सबसे पहले और सहायक विवरण बाद में हों, तो उलटा पिरामिड शैली पहचानें।

3(iv). ख़बर की पुष्टि करने वाले प्रत्यक्षदर्शियों के कथन को कहते हैं – [1 अंक]

(A) एंकर-पैकेज

(B) फोन-इन

(C) लाइव

(D) एंकर-बाइट

सही उत्तर: (D) एंकर-बाइट

हल:

अवधारणा:

- बाइट समाचार में शामिल संबंधित व्यक्ति या प्रत्यक्षदर्शी का संक्षिप्त कथन होता है।
- सही उत्तर चुनने के लिए प्रश्न के निर्णायक शब्द और प्रत्येक विकल्प का आशय अलग-अलग परखा जाता है।

चरण 1: मुख्य तथ्य की पहचान एंकर किसी खबर की जानकारी देता है और उसकी पुष्टि या समर्थन के लिए प्रत्यक्षदर्शी का कथन सुनवाया जाता है। इस रूप को एंकर-बाइट कहते हैं। प्रश्न में खबर की पुष्टि करने वाले प्रत्यक्षदर्शी के कथन का संकेत इसी ओर है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण एंकर-पैकेज में विस्तृत तैयार समाचार सामग्री शामिल होती है। फोन-इन में संवाददाता से फोन पर जानकारी ली जाती है। लाइव का अर्थ घटनास्थल से सीधा प्रसारण है। प्रत्यक्षदर्शी के कथन के लिए दिए गए विकल्पों में एंकर-बाइट ही सटीक है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है : एंकर-बाइट।

त्वरित सुझाव: प्रत्यक्षदर्शी का छोटा कथन दिखे तो बाइट पहचानें; सीधे प्रसारण और फोन से बातचीत से उसे अलग रखें।

3(v). समाचार के मुखड़े में खबर लिखी जाने का सही ककार क्रम है – [1 अंक]

(A) क्या, कौन, कब, कहाँ

(B) क्या, कौन, कब, क्यों

(C) कौन, क्यों, क्या, कैसे

(D) क्या, कहाँ, कब, कैसे

सही उत्तर: (A) क्या, कौन, कब, कहाँ

हल:

अवधारणा:

- समाचार के छह ककार हैं : क्या, कौन, कब, कहाँ, क्यों और कैसे।
- सही उत्तर चुनने के लिए प्रश्न के निर्णायक शब्द और प्रत्येक विकल्प का आशय अलग-अलग परखा जाता है।

चरण 1: मुख्य तथ्य की पहचान मुखड़ा समाचार का आरंभिक अंश है। उसमें घटना की मूल जानकारी दी जाती है कि क्या हुआ, कौन उससे जुड़ा है, घटना कब हुई और कहाँ हुई। इस प्रकार मूल ककारों का क्रम क्या, कौन, कब, कहाँ है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण क्यों और कैसे कारण तथा प्रक्रिया की जानकारी देते हैं; उनका विस्तार समाचार के आगे के भाग में किया जाता है। विकल्प (B) कहाँ की जगह क्यों रखता है। विकल्प (C) मूल क्रम बदलता है और विकल्प (D) कौन के स्थान पर कैसे शामिल करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : क्या, कौन, कब, कहाँ।

त्वरित सुझाव: मुखड़े के लिए घटना, संबंधित व्यक्ति, समय और स्थान का क्रम याद रखें : क्या, कौन, कब, कहाँ।

4. पिता का उस पर अगाध प्रेम होने के कारण स्वभावतः ईर्ष्यालु और संपत्ति की रक्षा में सतर्क विमाता ने उनके मरणांतक रोग का समाचार तब भेजा, जब वह मृत्यु की सूचना भी बन चुका था। रोने-पीटने के अपशकुन से बचने के लिए सास ने भी उसे कुछ न बताया। बहुत दिन से नैहर नहीं गई, सो जाकर देख आवे, यही कहकर और पहना-उढ़ाकर सास ने उसे विदा कर दिया। इस अप्रत्याशित अनुग्रह ने उसके पैरों में जो पंख लगा दिए थे, वे गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए। 'हाय लछमिन अब आई' की अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियाँ उसे घर तक ठेल ले गई। पर वहाँ न पिता का चिह्न शेष था, न विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था। दुख से शिथिल और अपमान से जलती हुई वह उस घर में पानी भी बिना पिए उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी। सास को खरी-खोटी सुनाकर उसने विमाता पर आया हुआ क्रोध शांत किया और पति के ऊपर गहने फेंक-फेंककर उसने पिता के चिर विछोह की मर्मव्यथा व्यक्त की। [5 अंक]

4(i). पिता की मृत्यु का समाचार भक्तिन के पास विमाता द्वारा देरी से भेजने का कारण था – [1 अंक]

(A) उसे पसंद न करना

(B) उससे ईर्ष्या करना

(C) संपत्ति की रक्षा करना

(D) कोई साधन न होना

सही उत्तर: (C) संपत्ति की रक्षा करना

हल:

अवधारणा:

- उत्तर गद्यांश में विमाता के व्यवहार के साथ दिए गए कारण से निर्धारित करना है।
- सही उत्तर चुनने के लिए प्रश्न के निर्णायक शब्द और प्रत्येक विकल्प का आशय अलग-अलग परखा जाता है।

चरण 1: मुख्य तथ्य की पहचान गद्यांश में विमाता को संपत्ति की रक्षा में सतर्क कहा गया है। पिता का भक्तिन पर अगाध प्रेम था। संपत्ति पर अपना नियंत्रण बनाए रखने की स्वार्थपूर्ण चिंता के कारण विमाता ने बीमारी का समाचार समय पर नहीं भेजा।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण ईर्ष्या उसके स्वभाव की विशेषता अवश्य है, इसलिए (B) आकर्षक लगता है; पर विलंब का विशिष्ट स्वार्थ संपत्ति की रक्षा था। केवल पसंद न करना (A) उतना सटीक नहीं है और साधन न होने (D) का उल्लेख गद्यांश में नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है : संपत्ति की रक्षा करना।

त्वरित सुझाव: स्वभाव और किसी काम के विशेष उद्देश्य में अंतर करें; यहाँ संपत्ति की रक्षा में सतर्क पद पर ध्यान दें।

4(ii). भक्तिन ने सास के किस व्यवहार को 'अप्रत्याशित अनुग्रह' कहा है ? [1 अंक]

(A) बिना कहे ही पिता के घर जाने के लिए कहना

(B) बढ़िया-बढ़िया वस्त्र पहनने के लिए देना

(C) बढ़िया-बढ़िया गहने पहनने के लिए देना

(D) पिता के घर जाने के लिए चना-चबेना देना

सही उत्तर: (A) बिना कहे ही पिता के घर जाने के लिए कहना

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में अनुग्रह का अर्थ ऐसी कृपा है जिसकी भक्तिन को पहले से आशा नहीं थी।
- सही उत्तर चुनने के लिए प्रश्न के निर्णायक शब्द और प्रत्येक विकल्प का आशय अलग-अलग परखा जाता है।

चरण 1: मुख्य तथ्य की पहचान सास ने स्वयं कहा कि बहुत दिन से नैहर नहीं गई, सो जाकर देख आवे। भक्तिन ने बिना माँगे मिली मायके जाने की अनुमति को विशेष कृपा समझा। इसी प्रसन्नता से उसके पैरों में मानो पंख लग गए।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण पहना-उढ़ाकर भेजना प्रसंग का एक हिस्सा है, पर अप्रत्याशित अनुग्रह का मुख्य आशय मायके जाने देना है। इसलिए केवल वस्त्र (B) या गहने (C) देना पूरा उत्तर नहीं है। चना-चबेना देने (D) की बात गद्यांश में नहीं आती।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : बिना कहे ही पिता के घर जाने के लिए कहना।

त्वरित सुझाव: किसी पद का आशय निकालते समय उससे ठीक पहले की मुख्य घटना देखें; यहाँ सास की अनायास मिली अनुमति है।

4(iii). 'पैरों के पंखों का गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ जाना' – का आशय है – [1 अंक]

(A) थकावट का दूर हो जाना

(B) खुशियों का समाप्त हो जाना

(C) खुशियों का दुख में बदल जाना

(D) पैरों की गति का मंद पड़ जाना

सही उत्तर: (C) खुशियों का दुख में बदल जाना

हल:

अवधारणा:

- पैरों में पंख लगना अत्यधिक प्रसन्नता और उत्साह का लाक्षणिक संकेत है।
- सही उत्तर चुनने के लिए प्रश्न के निर्णायक शब्द और प्रत्येक विकल्प का आशय अलग-अलग परखा जाता है।

चरण 1: मुख्य तथ्य की पहचान मायके जाने की अनुमति पाकर भक्तिन बहुत खुश थी। किंतु गाँव की सीमा पर सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियों और हाय लछमिन अब आई जैसे शब्दों ने अनिष्ट का आभास दे दिया। उसका उत्साह दुख में बदल गया।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण इसलिए (C) भाव के परिवर्तन को सबसे ठीक व्यक्त करता है। (B) केवल खुशियों के समाप्त होने की बात कहता है, दुख में बदलने को नहीं खोलता। थकावट दूर होना (A) प्रसंग-विरुद्ध है। पैरों की गति मंद होना (D) शाब्दिक अर्थ है, मुख्य भावार्थ नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है : खुशियों का दुख में बदल जाना।

त्वरित सुझाव: पंख लगने को उत्साह से जोड़ें और पंख झड़ने का अर्थ प्रसंग में आए दुखद परिवर्तन से निकालें।

4(iv). निम्नलिखित कथन, कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कथन (A) : लक्ष्मी पिता के घर में पानी भी बिना पिए उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी।

कारण (R) : वह पिता के चिर-वियोग और विमाता के व्यवहार से दुखी थी। [1 अंक]

(A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(B) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

(C) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(D) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता गद्यांश से जाँचकर उनके बीच कारणात्मक संबंध स्थापित करना है।
- भक्तिन का शोक पिता के स्थायी वियोग से और अपमान विमाता के अशिष्ट व्यवहार से जुड़ा है।

चरण 1: कथन की सत्यता गद्यांश स्पष्ट कहता है कि भक्तिन दुख से शिथिल और अपमान से जलती हुई उस घर में पानी भी बिना पिए उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी। अतः कथन (A) सही है। उसका लौटना केवल सामान्य विदाई नहीं, दुख और अपमान की तीव्र प्रतिक्रिया है।

चरण 2: कारण की सत्यता घर पहुँचने पर पिता का चिह्न भी शेष नहीं था और विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार नहीं था। इससे भक्तिन को पिता के चिर-वियोग का शोक और विमाता से अपमान का अनुभव हुआ। अतः कारण (R) भी गद्यांश के अनुसार सही है।

चरण 3: कथन और कारण का संबंध इन्हीं दोनों दुखों के कारण वह घर में रुकना नहीं चाहती थी और पानी पिए बिना लौट गई। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है। दोनों को गलत बताने वाला (C), कथन को गलत कहने वाला (B) और व्याख्या को गलत बताने वाला (D) असंगत हैं।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

त्वरित सुझाव: पहले दोनों वाक्यों की सत्यता जाँचें, फिर देखें कि बताया गया दुख उसके तत्काल लौटने का कारण बनता है या नहीं।

4(v). गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए –

(क) गाँव की सीमा में पहुँचते ही लक्ष्मी के पैरों में पंख लग गए।

(ख) लक्ष्मी को देखते ही गाँव वाले उसे सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से देखने लगे।

(ग) लक्ष्मी ने विमाता पर आया क्रोध पति को खरी-खोटी सुनाकर शांत किया।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल (क)

(B) केवल (ख)

(C) केवल (क) और (ग)

(D) केवल (ख) और (ग)

सही उत्तर: (B) केवल (ख)

हल:

अवधारणा:

- कथनों को गद्यांश की घटनाओं और पात्रों के व्यवहार से मिलाना चाहिए।
- सही विकल्प के साथ दूसरे विकल्पों का प्रसंग से मेल भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और अर्थ की पहचान केवल कथन (ख) सही है। गाँव वालों की सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियाँ लक्ष्मी के दुख का संकेत देती हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच कथन (क) गलत है, क्योंकि गाँव की सीमा पर पहुँचते ही उसके पैरों के पंख लगते नहीं, झड़ जाते हैं। पिता के घर जाने का उत्साह वहीं समाप्त हो जाता है। कथन (ग) भी गलत है, क्योंकि उसने खरी-खोटी सास को सुनाई थी, पति को नहीं। पति पर उसने गहने फेंककर दुख प्रकट किया था।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B), केवल (ख), है।

त्वरित सुझाव: कथन में पात्र और क्रिया दोनों मिलाएँ; सास को सुनाना और पति पर गहने फेंकना अलग घटनाएँ हैं।

---

5. झूमने लगे फल,
रस अलौकिक,
अमृत धाराएँ फूटती
रोपाई क्षण की
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती
रस का अक्षय पात्र सदा का
छोटा मेरा खेत चौकोना [5 अंक]

5(i). साहित्यिक कृति से जो अलौकिक अमृत-धारा फूटी, वह किसका परिणाम है ? [1 अंक]

(A) कवि की कल्पना का

(B) किसान की मेहनत का

(C) क्षण में होने वाली रोपाई का

(D) क्षण में होने वाली कटाई का

सही उत्तर: (C) क्षण में होने वाली रोपाई का

हल:

अवधारणा:

- खेती की शब्दावली यहाँ कविता की रचना और उससे मिलने वाले आनंद का रूपक है।
- सही विकल्प के साथ दूसरे विकल्पों का प्रसंग से मेल भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और अर्थ की पहचान काव्यांश में 'रोपाई क्षण की' के बाद 'कटाई अनंतता की' कहा गया है। सृजन के एक क्षण में अनुभूति शब्दबद्ध होकर कृति बनती है और उससे अलौकिक रस की अमृत-धारा फूटती है। इसलिए यह धारा क्षण में होने वाली रोपाई अर्थात रचना के जन्म का परिणाम है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच विकल्प (C) सीधे काव्यांश की रोपाई और उसके परिणाम का संबंध स्पष्ट करता है। (A) कवि की कल्पना रचनात्मक प्रक्रिया से संबंधित है, पर यहाँ दी गई पंक्तियों में परिणाम को उत्पन्न करने वाली क्रिया रोपाई है। (B) वास्तविक किसान की मेहनत का उल्लेख करता है, जबकि खेती यहाँ रूपक है। (D) गलत है, क्योंकि कटाई क्षण की नहीं, अनंतता की कही गई है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C), क्षण में होने वाली रोपाई का, है।

त्वरित सुझाव: काव्यांश के भीतर कारण और परिणाम जोड़ें: क्षण में रचना जन्म लेती है और उसका रस निरंतर मिलता रहता है।

5(ii). 'कटाई अनंतता की' के माध्यम से कवि साहित्य की किस विशेषता की ओर संकेत करना चाहता है ? [1 अंक]

(A) साहित्य कालजयी होता है।

(B) साहित्य समाज-सापेक्ष होता है।

(C) साहित्य समाज का दर्पण होता है।

(D) साहित्य अनंतता का भंडार होता है।

सही उत्तर: (A) साहित्य कालजयी होता है।

हल:

अवधारणा:

- रचना का सृजन सीमित समय में होता है, किंतु उसका प्रभाव लंबे समय तक बना रहता है।
- सही विकल्प के साथ दूसरे विकल्पों का प्रसंग से मेल भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और अर्थ की पहचान 'कटाई अनंतता की' का आशय है कि पाठक रचना से बार-बार और निरंतर आनंद प्राप्त करते रहते हैं। रचना अपने सृजन-काल की सीमा पार कर जाती है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच इसीलिए विकल्प (A) का कालजयी होना उचित है। (B) साहित्य के समाज से संबंध और (C) समाज के प्रतिबिंब की बात कहते हैं; ये इस पंक्ति का समय-संबंधी आशय नहीं बताते। (D) में अनंतता का भंडार कहना अस्पष्ट है; पंक्ति आनंद की उपलब्धि के अनंत काल तक जारी रहने पर बल देती है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A), साहित्य कालजयी होता है, है।

त्वरित सुझाव: 'रोपाई क्षण की' के सामने 'कटाई अनंतता की' रखकर सृजन और आस्वादन की समयावधि समझें।

5(iii). रचना कर्म की दृष्टि से साहित्य को 'रस का अक्षय पात्र' क्यों कहा गया है ? [1 अंक]

(A) साहित्य जगत में कवि की पहचान अनंतकाल तक बनी रहने के कारण

(B) साहित्य से प्राप्त आनंद के अनंतकाल तक बने रहने के कारण

(C) साहित्य और समाज का घनिष्ठ संबंध होने के कारण

(D) साहित्य मनोरंजन का प्रमुख साधन होने के कारण

सही उत्तर: (B) साहित्य से प्राप्त आनंद के अनंतकाल तक बने रहने के कारण

हल:

अवधारणा:

- अक्षय का अर्थ है जिसका क्षय न हो; यहाँ पात्र साहित्यिक रस को धारण करने वाली रचना है।
- सही विकल्प के साथ दूसरे विकल्पों का प्रसंग से मेल भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और अर्थ की पहचान काव्यांश स्पष्ट कहता है कि लुटते रहने से रस जरा भी कम नहीं होता। साहित्य से मिलने वाला आनंद पाठकों के बार-बार पढ़ने और नए पाठकों तक पहुँचने पर भी बना रहता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच इसलिए (B) उपयुक्त है। (A) कवि की व्यक्तिगत प्रसिद्धि को प्रधान बनाता है, जबकि पंक्तियाँ रस के बने रहने पर केंद्रित हैं। (C) समाज से घनिष्ठ संबंध की बात कहता है, जो अक्षयता की व्याख्या नहीं है। (D) केवल मनोरंजन का साधन बताता है; इससे आनंद का अनंतकाल तक बने रहना स्पष्ट नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B), साहित्य से प्राप्त आनंद के अनंतकाल तक बने रहने के कारण, है।

त्वरित सुझाव: अक्षय पात्र का संबंध कवि की प्रसिद्धि से नहीं, बाँटने पर भी कम न होने वाले साहित्यिक आनंद से जोड़ें।

5(iv). कवि कर्म की दृष्टि से 'रोपाई' का अर्थ है [1 अंक]

(A) काव्यानंद की अनुभूति

(B) फसल की कटाई करना

(C) बीजों की बुवाई करना

(D) अनुभूति को शब्द-बद्ध करना

सही उत्तर: (D) अनुभूति को शब्द-बद्ध करना

हल:

अवधारणा:

- काव्य के रूपक में खेती की क्रियाएँ कवि की रचना प्रक्रिया के विभिन्न चरणों को व्यक्त करती हैं।
- सही विकल्प के साथ दूसरे विकल्पों का प्रसंग से मेल भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और अर्थ की पहचान कवि कर्म में रोपाई का अर्थ अपनी अनुभूति को शब्दों में ढालना है। जिस तरह खेत में रोपाई से फसल का आरंभ होता है, उसी तरह कागज पर अनुभूति का शब्दबद्ध होना साहित्यिक रचना को जन्म देता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (A) काव्यानंद की अनुभूति रचना के आस्वादन से जुड़ी है। (B) फसल काटना रोपाई से अलग क्रिया है। (C) बीजों की बुवाई खेती का शाब्दिक अर्थ देता है; प्रश्न विशेष रूप से कवि कर्म की दृष्टि पूछता है, इसलिए प्रतीकात्मक अर्थ चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D), अनुभूति को शब्द-बद्ध करना, है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में 'कवि कर्म की दृष्टि' देखकर खेती की क्रिया को रचना प्रक्रिया की क्रिया में बदलें।

5(v). छोटा खेत किसका प्रतीकार्थ है ? [1 अंक]

(A) फसल रोपे जाने वाले खेत का।

(B) आकार में छोटे खेत का।

(C) कागज के उस पन्ने का जिस पर रचना शब्द-बद्ध होती है।

(D) कागज के उस पन्ने का जो पुस्तक में जिल्द-बद्ध रहता है।

सही उत्तर: (C) कागज के उस पन्ने का जिस पर रचना शब्द-बद्ध होती है।

हल:

अवधारणा:

- रूपक में चौकोना खेत वह आधार है जिस पर कवि अपनी अनुभूति को साहित्यिक रूप देता है।
- सही विकल्प के साथ दूसरे विकल्पों का प्रसंग से मेल भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और अर्थ की पहचान कागज का पन्ना आकार में छोटा और चौकोना होता है। उसी पर कवि शब्दों की रचना करता है और उसी सीमित स्थान से पाठकों के लिए असीम साहित्यिक आनंद उत्पन्न होता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच इसलिए (C) रचना और पन्ने के संबंध को सही बताता है। (A) वास्तविक खेती वाले खेत का अर्थ लेता है और (B) केवल खेत के आकार तक सीमित है; दोनों प्रतीक नहीं खोलते। (D) जिल्द-बद्ध पुस्तक के पन्ने पर बल देता है, जबकि यहाँ मुख्य बात अनुभूति का पन्ने पर शब्दबद्ध होना है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C), कागज के उस पन्ने का जिस पर रचना शब्द-बद्ध होती है, है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक पहचानते समय छोटे आकार के साथ उस स्थान पर होने वाली रचनात्मक क्रिया भी देखें।

6(i). यशोधरा बाबू के द्वारा दफ़्तर से लौटते समय कौन-सा काम नहीं किया जाता था ? [1 अंक]

(A) रोज बिड़ला मंदिर जाना

(B) उद्यान में बैठकर प्रभु भजन सुनना

(C) स्वयं ही प्रभु का ध्यान लगाना

(D) स्वयं ही योगासन करना

सही उत्तर: (D) स्वयं ही योगासन करना

हल:

अवधारणा:

- कथा में पात्र की दिनचर्या उसके स्वभाव और जीवन-मूल्यों का परिचय देती है।
- सही विकल्प के साथ दूसरे विकल्पों का प्रसंग से मेल भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और अर्थ की पहचान यशोधर बाबू दफ्तर से लौटते समय बिड़ला मंदिर जाते थे। उद्यान में बैठकर प्रभु-भजन सुनना और स्वयं प्रभु का ध्यान लगाना उनकी धार्मिक रुचि के अनुरूप दिनचर्या में आते थे।

चरण 2: विकल्पों की जाँच प्रश्न में न की जाने वाली क्रिया पूछी गई है। इसलिए विकल्प (A), (B) और (C) उनकी बताई गई गतिविधियों के कारण उत्तर नहीं हैं। स्वयं योगासन करना इस लौटने की दिनचर्या का हिस्सा नहीं बताया गया है, इसलिए निषेधात्मक प्रश्न में वही उचित चयन है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D), स्वयं ही योगासन करना, है।

त्वरित सुझाव: 'नहीं किया जाता था' रेखांकित करके पहले की जाने वाली गतिविधियाँ हटाएँ, फिर शेष विकल्प चुनें।

6(ii). आनंदा के पिता के द्वारा स्वयं खेतों में काम न कर अपने बेटे से काम करवाने से, उसके व्यक्तित्व की किस विशेषता का पता चलता है ? [1 अंक]

(A) वह अपने बेटे को आत्मनिर्भर बनाना चाहता था।

(B) वह अपने बेटे को परिश्रमी बनाना चाहता था।

(C) वह आलसी और कामचोर था।

(D) वह अपने कर्तव्य का निर्वाह करना जानता था।

सही उत्तर: (C) वह आलसी और कामचोर था।

हल:

अवधारणा:

- चरित्र का मूल्यांकन उसके व्यवहार से होता है; उद्देश्य का अनुमान उसके वास्तविक आचरण के आधार पर करना चाहिए।
- सही विकल्प के साथ दूसरे विकल्पों का प्रसंग से मेल भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और अर्थ की पहचान आनंदा के पिता स्वयं खेती का श्रम करने से बचते हैं और बेटे से काम करवाते हैं। वे बेटे की पढ़ाई के अवसर को सीमित करके उसे खेतों की जिम्मेदारी में लगाए रखते हैं। इससे उनका आलस्य और काम से बचने का स्वभाव उजागर होता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (A) आत्मनिर्भर बनाना और (B) परिश्रमी बनाना सकारात्मक प्रशिक्षण का संकेत देते हैं, पर यहाँ पिता अपना श्रम बेटे पर डाल रहे हैं। (D) भी उचित नहीं, क्योंकि अपने दायित्व से बचना कर्तव्य-निर्वाह नहीं है। इस व्यवहार के अनुरूप नकारात्मक विशेषता ही चुननी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C), वह आलसी और कामचोर था, है।

त्वरित सुझाव: पात्र के घोषित उद्देश्य के बजाय देखें कि वह खुद जिम्मेदारी निभा रहा है या अपना काम दूसरे पर डाल रहा है।

6(iii). मुअनजो-दड़ो में खेती-बाड़ी के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले औज़ार बने होते थे – [1 अंक]

(A) पत्थर और लोहे के

(B) पत्थर और ताँबे के

(C) पत्थर और काँसे के

(D) पत्थर और लकड़ी के

सही उत्तर: (B) पत्थर और ताँबे के

हल:

अवधारणा:

- अतीत में दबे पाँव के प्रसंग और पात्रों से संबंधित तथ्य की पहचान।
- खेती के औजारों की सामग्री को पाठ के स्पष्ट विवरण के आधार पर समझना।

चरण 1: पाठ का संबंधित प्रसंग पाठ में कृषि के लिए पत्थर और ताँबे के औजारों के प्रयोग का उल्लेख मिलता है। यह तथ्य नगर की कृषि संबंधी गतिविधियों और तत्कालीन तकनीकी साधनों को स्पष्ट करता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) में लोहा, (C) में काँसा और (D) में लकड़ी दी गई है। ये तीनों जोड़ियाँ पाठ में बताए गए कृषि-औजारों की सामग्री से मेल नहीं खातीं। केवल (B) में पत्थर और ताँबा दोनों सही हैं।

चरण 3: निष्कर्ष खेती-बाड़ी के औजार पत्थर और ताँबे के बने होते थे। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: औजारों की सामग्री पूछे जाने पर बर्तनों और दूसरी वस्तुओं की धातुओं से उसे अलग करके पहचानें।

6(iv). यशोधर बाबू के मातहत उन्हें क्यों पसंद नहीं करते थे ? [1 अंक]

(A) वे अपना काम अपने मातहतों से करवाते थे।

(B) उनके कारण उन्हें दफ्तर में देर तक बैठना पड़ता था।

(C) वे जूनियरों के साथ कठोर व्यवहार करते थे।

(D) मातहतों का हँसी-मजाक उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था।

सही उत्तर: (B) उनके कारण उन्हें दफ्तर में देर तक बैठना पड़ता था।

हल:

अवधारणा:

- सिल्वर वैडिंग के प्रसंग और पात्रों से संबंधित तथ्य की पहचान।
- दफ्तर में यशोधर बाबू और मातहतों का संबंध को पाठ के स्पष्ट विवरण के आधार पर समझना।

चरण 1: पाठ का संबंधित प्रसंग यशोधर बाबू के कारण उनके मातहतों को कार्यालय का समय समाप्त हो जाने के बाद भी बैठना पड़ता था। इस प्रसंग में असंतोष का तात्कालिक कारण देर तक दफ्तर में रुकने की विवशता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) में अपना काम दूसरों से कराने और (C) में कठोर व्यवहार की बात है; ये इस प्रश्न के प्रसंगगत कारण नहीं हैं। (D) भी गलत है, क्योंकि वे जाते समय जूनियरों से मनोरंजक बात करते थे। इसलिए (B) उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष उनके कारण मातहतों को दफ्तर में देर तक बैठना पड़ता था। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: किसी पात्र के प्रति नाराजगी का कारण उसी कार्यालयी प्रसंग से चुनें, सामान्य स्वभाव का अनुमान न लगाएँ।

6(ix). मुअनजो-दड़ो की गलियों में टहलते हुए लेखक को किस जगह की याद आई ? [1 अंक]

(A) राजस्थान के गाँव कुलधरा की

(B) हरियाणा के गाँव कुलधरा की

(C) गुजरात के गाँव कुलधरा की

(D) पंजाब के गाँव कुलधरा की

सही उत्तर: (A) राजस्थान के गाँव कुलधरा की

हल:

अवधारणा:

- अतीत में दबे पाँव के प्रसंग और पात्रों से संबंधित तथ्य की पहचान।
- स्थान-स्मृति और यात्रा-वृत्तांत को पाठ के स्पष्ट विवरण के आधार पर समझना।

चरण 1: पाठ का संबंधित प्रसंग मुअनजो-दड़ो की गलियों में घूमते हुए लेखक को राजस्थान के उजड़े गाँव कुलधरा की याद आती है। यहाँ प्रश्न लेखक की स्मृति में आए स्थान और उसके राज्य, दोनों की पहचान चाहता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण चारों विकल्पों में गाँव का नाम एक ही है, किंतु राज्य अलग हैं। (B) का हरियाणा, (C) का गुजरात और (D) का पंजाब पाठ के स्थान-संदर्भ से मेल नहीं खाते। कुलधरा राजस्थान में है, इसलिए (A) सही है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक को राजस्थान के गाँव कुलधरा की याद आई। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: सभी विकल्पों में स्थान का नाम समान हो तो बदलते हुए राज्य पर ध्यान दें और दोनों का सही जोड़ा चुनें।

6(v). दफ़्तर से बाहर निकलते समय यशोधर बाबू किशन दा द्वारा सिखाई गई कौन-सी परंपरा का पालन अवश्य करते ? [1 अंक]

(A) जूनियरों के साथ चाय-कॉफी पीना

(B) जूनियरों के साथ मनोरंजक बात करना

(C) अपनी टेबल का सारा काम खत्म करना

(D) जूनियरों के दिन-भर के काम का लेखा-जोखा लेना

सही उत्तर: (B) जूनियरों के साथ मनोरंजक बात करना

हल:

अवधारणा:

- सिल्वर वैडिंग के प्रसंग और पात्रों से संबंधित तथ्य की पहचान।
- किशन दा से मिली कार्यालयी परंपरा को पाठ के स्पष्ट विवरण के आधार पर समझना।

चरण 1: पाठ का संबंधित प्रसंग यशोधर बाबू दफ्तर से निकलते समय जूनियरों से कोई मनोरंजक बात करते थे। किशन दा से मिली इस परंपरा का उद्देश्य दिन-भर के शुष्क व्यवहार को सहज बातचीत से हल्का करना था।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) में चाय-कॉफी पीना इस विशेष परंपरा का हिस्सा नहीं है। (C) में काम समाप्त करना और (D) में काम का लेखा-जोखा लेना कार्यालयी कार्य हैं; प्रश्न जाते समय की आत्मीय बातचीत पूछता है। इसलिए (B) सही है।

चरण 3: निष्कर्ष वे जूनियरों के साथ मनोरंजक बात करने की परंपरा निभाते थे। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: परंपरा का संकेत मिलते ही किशन दा से सीखी मानवीय आदत पहचानें और उसे नियमित कार्यालयी काम से अलग करें।

6(vi). दीवाली बीतते ही गाँव में कैसी चहल-पहल शुरू हो जाती थी ? [1 अंक]

(A) खेतों में फसलों की बुवाई शुरू होने लगती थी।

(B) खेतों में फसलों की कटाई शुरू होने लगती थी।

(C) ईख पेरने के लिए कोल्हू चलने लगते थे।

(D) फसलों को बेचने का काम शुरू होने लगता था।

सही उत्तर: (C) ईख पेरने के लिए कोल्हू चलने लगते थे।

हल:

अवधारणा:

- जूझ के प्रसंग और पात्रों से संबंधित तथ्य की पहचान।
- ग्रामीण जीवन का मौसमी प्रसंग को पाठ के स्पष्ट विवरण के आधार पर समझना।

चरण 1: पाठ का संबंधित प्रसंग दीवाली बीतने पर गाँव में ईख पेरने का काम आरंभ होता था और कोल्हू चलने लगते थे। इसी गतिविधि से पैदा हुई व्यस्तता और हलचल को प्रश्न में चहल-पहल कहा गया है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) बुवाई और (B) कटाई की सामान्य कृषि गतिविधियाँ बताते हैं, किंतु पाठ के इस अवसर का विशिष्ट वर्णन नहीं हैं। (D) फसल बेचने की बात करता है। दीवाली के बाद का उल्लिखित दृश्य ईख पेरने का है, इसलिए (C) सही है।

चरण 3: निष्कर्ष ईख पेरने के लिए कोल्हू चलने लगते थे। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: मौसम या त्योहार से जुड़े प्रश्न में सामान्य खेती की जानकारी के बजाय पाठ में उल्लिखित खास गतिविधि याद करें।

6(vii). आनंदा को स्कूल में फिर से नाम लिखवाने की जरूरत क्यों नहीं पड़ी ? [1 अंक]

(A) क्योंकि दत्ताजी राव ने उसे स्कूल पढ़ने के लिए भेजा था।

(B) क्योंकि उसका नाम रजिस्टर से कटा नहीं था।

(C) क्योंकि वह गाँव के प्रतिष्ठित परिवार से था।

(D) क्योंकि उसके पिता के मास्टर जी से घनिष्ठ संबंध थे।

सही उत्तर: (B) क्योंकि उसका नाम रजिस्टर से कटा नहीं था।

हल:

अवधारणा:

- जूझ के प्रसंग और पात्रों से संबंधित तथ्य की पहचान।
- विद्यालय में पुन: प्रवेश का प्रसंग को पाठ के स्पष्ट विवरण के आधार पर समझना।

चरण 1: पाठ का संबंधित प्रसंग आनंदा का नाम विद्यालय के रजिस्टर से काटा नहीं गया था। इसलिए पढ़ाई फिर शुरू करते समय उसे नया नाम लिखवाने की औपचारिकता पूरी करने की जरूरत नहीं पड़ी। प्रश्न इसी प्रशासनिक कारण पर आधारित है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण दत्ताजी राव का सहयोग पढ़ाई की राह खोलता है, पर (A) नया नाम न लिखवाने का प्रत्यक्ष कारण नहीं है। (C) में प्रतिष्ठित परिवार और (D) में पिता-मास्टर के संबंध का उल्लेख इस तथ्य का आधार नहीं है। सही कारण (B) में है।

चरण 3: निष्कर्ष उसका नाम रजिस्टर से कटा नहीं था। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पढ़ाई दोबारा शुरू करने की प्रेरणा और प्रवेश की औपचारिकता का कारण अलग रखें; यहाँ रजिस्टर निर्णायक है।

6(viii). आनंदा ने पाठशाला नहीं जाने की बात क्यों सोची ? [1 अंक]

(A) लड़कों द्वारा खिल्ली उड़ाये जाने के कारण

(B) मास्टर जी के कठोर व्यवहार के कारण

(C) स्कूल की वर्दी न होने के कारण

(D) कॉपी-किताब न होने के कारण

सही उत्तर: (A) लड़कों द्वारा खिल्ली उड़ाये जाने के कारण

हल:

अवधारणा:

- जूझ के प्रसंग और पात्रों से संबंधित तथ्य की पहचान।
- सहपाठियों का व्यवहार और बालमन को पाठ के स्पष्ट विवरण के आधार पर समझना।

चरण 1: पाठ का संबंधित प्रसंग विद्यालय लौटने पर लड़कों ने आनंदा की खिल्ली उड़ाई। इस उपहास से उसे अपमान और संकोच का अनुभव हुआ, जिसके कारण उसके मन में पाठशाला न जाने का विचार आया। यह प्रतिक्रिया सहपाठियों के व्यवहार से जुड़ी है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (B) में मास्टर जी की कठोरता बताई गई है, जो इस विचार का कारण नहीं है। (C) में वर्दी और (D) में कॉपी-किताब की कमी को कारण बनाया गया है; प्रश्न के प्रसंग में निर्णायक घटना लड़कों का उपहास है। इसलिए (A) सही है।

चरण 3: निष्कर्ष लड़कों द्वारा खिल्ली उड़ाए जाने के कारण उसने पाठशाला न जाने की सोची। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पात्र के किसी निर्णय का कारण चुनते समय ठीक उससे पहले की घटना पहचानें; यहाँ लड़कों का उपहास निर्णायक है।

6(x). निम्नलिखित कथन, कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए :
कथन (A) : सिंधु घाटी सभ्यता लघुता में भी महत्ता का अनुभव कराने वाली संस्कृति थी।
कारण (R) : (क) लो-प्रोफाइल सभ्यता थी।
(ख) यहाँ के मूर्तिशिल्प, औजार छोटे हैं।
(ग) यहाँ मिले नरेश के सिर से छोटे सिरपेंच की कल्पना भी नहीं की जा सकती। [1 अंक]

(A) कथन (A) सही है, पर सभी कारण (R) ठीक नहीं हैं।
(B) कथन (A) सही है और (ख) और (ग) कारण (R) उसकी सही व्याख्या करते हैं।
(C) कथन (A) गलत है पर सभी कारण (R) ठीक हैं।
(D) कथन (A) सही है और तीनों कारण (R) उसकी सही व्याख्या करते हैं।

सही उत्तर: (B) कथन (A) सही है और (ख) और (ग) कारण (R) उसकी सही व्याख्या करते हैं।

हल:

अवधारणा:

- सिंधु सभ्यता के कला-बोध में आकार की लघुता और सांस्कृतिक महत्ता का संबंध।
- कथन और प्रत्येक कारण की सत्यता जाँचकर उनके व्याख्यात्मक संबंध का निर्णय।

चरण 1: कथन की जाँच सिंधु घाटी सभ्यता अपनी छोटी कलात्मक वस्तुओं में भी उत्कृष्ट सौंदर्य-बोध दिखाती है। इसलिए आकार में लघु होते हुए महत्ता का अनुभव कराने वाली संस्कृति संबंधी कथन सही है।

चरण 2: तीनों कारणों की जाँच इस सभ्यता का लो-प्रोफाइल होना उसके आडंबरहीन और सादगीपूर्ण स्वरूप का सामान्य परिचय देता है। मूर्तिशिल्प तथा औजारों का छोटा आकार और नरेश का छोटा सिरपेच लघु कलावस्तुओं के विशिष्ट उदाहरण हैं। इसलिए तीनों कारण सत्य होने पर भी उनकी व्याख्यात्मक भूमिका समान नहीं है।

चरण 3: कारणों का कथन से संबंध कारण (ख) और (ग) छोटे आकार की वस्तुओं में निहित कलात्मक महत्ता को सीधे स्पष्ट करते हैं। कारण (क) सामान्य सांस्कृतिक स्वभाव बताता है; वह इस विशिष्ट कथन की सीधी व्याख्या नहीं है। इसलिए (D) में तीनों को सही व्याख्या कहना उचित नहीं है। (A) सभी कारणों की सत्यता स्वीकार नहीं करता और (C) सही कथन को गलत कहता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन सही है और कारण (ख) तथा (ग) उसकी सही व्याख्या करते हैं। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: कारण का सत्य होना और कथन की सीधी व्याख्या करना अलग बातें हैं; यहाँ छोटे आकार के ठोस उदाहरण पहचानें।

7(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए –
कहानी और नाटक में पाई जाने वाली समानताओं और असमानताओं का उल्लेख कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी और नाटक दोनों साहित्यिक विधाएँ हैं। कथावस्तु, पात्र, संवाद और संघर्ष इनके सामान्य तत्त्व हैं।
- कहानी मुख्यतः पढ़ी जाती है, जबकि नाटक मंच पर अभिनय द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। माध्यम बदलने से अभिव्यक्ति की विधि बदलती है।

चरण 1: दोनों विधाओं की समानताएँ पहचानना कहानी और नाटक दोनों में किसी घटना या अनुभव को पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। दोनों में घटनाओं का क्रम, चरित्रों का विकास, संवाद और संघर्ष महत्त्वपूर्ण होते हैं। दोनों पाठक या दर्शक के मन में संवेदना जगाते हैं। इसलिए इन्हें पूरी तरह अलग विषयवस्तु वाली विधाएँ मानना उचित नहीं है।

चरण 2: प्रस्तुति और अभिव्यक्ति का अंतर स्पष्ट करना कहानीकार वर्णन द्वारा परिवेश, समय और पात्रों के मन की बातें सीधे बता सकता है। नाटक में यही बातें पात्रों के संवाद, अभिनय, मंचीय गतिविधियों, प्रकाश तथा ध्वनि से व्यक्त करनी पड़ती हैं। कहानी में

घटनाओं को विस्तार से सुनाया जा सकता है; मंच पर दृश्य की व्यावहारिक सीमाओं के कारण चयन और संक्षेप आवश्यक होता है। नाटक की घटना दर्शक के सामने घटती हुई दिखाई देती है।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी और नाटक में कथावस्तु, पात्र, संवाद तथा संघर्ष समान तत्त्व हैं। दोनों मानवीय अनुभव और संवेदनाएँ व्यक्त करते हैं। कहानी में कथावाचक वर्णन द्वारा परिवेश और मनोभाव बता सकता है, जबकि नाटक में उन्हें संवाद, अभिनय और दृश्य से दिखाना पड़ता है। कहानी पढ़ी जाती है; नाटक मंच पर प्रस्तुत होता है, इसलिए उसमें मंचीय सीमाओं का ध्यान आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले समान तत्त्व लिखें, फिर पढ़ने और मंच पर देखने के अंतर से दोनों विधाओं की असमानता समझाएँ।

7(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए –

"रेडियो नाटक का लेखन सिनेमा और रंगमंच के लेखन से थोड़ा भिन्न भी है और थोड़ा मुश्किल भी" – कैसे ? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है। श्रोता दृश्य नहीं देखता; वह संवाद, संगीत और ध्वनि के आधार पर घटनाओं की कल्पना करता है।
- रेडियो नाटक में कथानक और पात्रों की पहचान श्रव्य संकेतों से स्पष्ट करना लेखन की प्रमुख चुनौती है।

चरण 1: रेडियो और दृश्य माध्यमों का अंतर समझना सिनेमा और रंगमंच में दर्शक पात्रों की वेशभूषा, मुखमुद्रा, क्रिया तथा दृश्य परिवेश देख सकता है। रेडियो में ये दृश्य साधन उपलब्ध नहीं होते। वहाँ पात्र के प्रवेश, स्थान के बदलने अथवा किसी घटना के घटने की सूचना भी सुनकर ही समझनी होती है। इस कारण रेडियो नाटक का लेखन दृश्य माध्यमों के लेखन से भिन्न होता है।

चरण 2: लेखन की कठिनाई का तर्क देना लेखक को ऐसे स्वाभाविक और स्पष्ट संवाद बनाने पड़ते हैं जिनसे पात्रों के संबंध, परिस्थितियाँ और भाव समझ में आएँ। उपयुक्त ध्वनि प्रभाव वातावरण बनाते हैं; जैसे पदचाप किसी के आने का संकेत दे सकती है। संगीत, आवाज और विराम का प्रयोग भी अर्थपूर्ण होना चाहिए। सभी दृश्य सूचनाएँ केवल वर्णन बनकर न रह जाएँ और श्रोता भ्रमित भी न हो, इस संतुलन को साधना कठिन होता है।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो नाटक केवल सुनाई देता है, जबकि सिनेमा और रंगमंच में दृश्य भी उपलब्ध होते हैं। अतः रेडियो लेखक को संवाद, आवाज, संगीत और ध्वनि प्रभावों से ही पात्र, स्थान, वातावरण तथा घटनाएँ स्पष्ट करनी पड़ती हैं। संवाद स्वाभाविक भी रहें और आवश्यक सूचनाएँ भी दें, यह संतुलन कठिन है। इसलिए इसका लेखन भिन्न होने के साथ अधिक चुनौतीपूर्ण भी है।

त्वरित सुझाव: रेडियो की श्रव्य प्रकृति को आधार बनाएँ और बताएँ कि दृश्य सूचना संवाद तथा ध्वनि द्वारा कैसे पहुँचती है।

7(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए –

कथावस्तु का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य किस आधार पर विभाजित किए जाते हैं ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाट्य रूपांतरण में कहानी की घटनाओं को मंच पर प्रस्तुत करने योग्य दृश्य इकाइयों में व्यवस्थित किया जाता है।
- दृश्य विभाजन का मुख्य आधार घटनास्थल और समय में परिवर्तन है; घटनाक्रम तथा मंचीय आवश्यकता भी ध्यान में रखी जाती है।

चरण 1: स्थान और समय के परिवर्तन को आधार बनाना कहानी में कथावाचक वर्णन के सहारे एक स्थान से दूसरे स्थान या एक समय से दूसरे समय में आसानी से पहुँच सकता है। नाटक में दर्शक के सामने एक निश्चित दृश्य प्रस्तुत होता है। इसलिए जब घटनास्थल बदलता है अथवा कथा किसी दूसरे समय की घटना पर पहुँचती है, तब नए दृश्य की आवश्यकता होती है। दृश्य विभाजन से इन परिवर्तनों को दर्शक के लिए स्पष्ट बनाया जाता है।

चरण 2: घटनाक्रम और मंचीय प्रस्तुति का ध्यान रखना दृश्य का चयन कथा की प्रगति के अनुसार होना चाहिए। पात्रों की उपस्थिति और उनके प्रवेश या प्रस्थान को भी दृश्य की योजना में रखा जाता है। किंतु हर छोटे संवाद पर दृश्य नहीं बदलना चाहिए। एक ही स्थान और समय में चल रही घटनाओं को संगठित रखना चाहिए। दृश्य परिवर्तन ऐसा हो कि कथा की निरंतरता बनी रहे और मंच सज्जा, प्रकाश तथा अभिनय की व्यवस्था भी व्यावहारिक रहे।

चरण 3: निष्कर्ष कथावस्तु के नाट्य रूपांतरण में दृश्यों का विभाजन मुख्यतः स्थान और समय के परिवर्तन के आधार पर किया जाता है। घटनास्थल बदलने या समयांतराल आने पर नया दृश्य बनाया जाता है। पात्रों के प्रवेश-प्रस्थान, घटनाक्रम और मंचीय आवश्यकताओं का भी ध्यान रखा जाता है। प्रत्येक दृश्य कथा को आगे बढ़ाए तथा दृश्य परिवर्तन से घटनाओं की निरंतरता और स्पष्टता बनी रहे।

त्वरित सुझाव: दृश्य विभाजन का मुख्य आधार स्थान और समय लिखें; फिर कथाक्रम, पात्रों और मंचीय आवश्यकता का संबंध स्पष्ट करें।

8(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए :

जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में से सबसे पुराना माध्यम कौन-सा है ? उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में मुद्रित माध्यम सबसे पुराना है। समाचारपत्र और पत्रिकाएँ इसके प्रमुख उदाहरण हैं।
- सामग्री का स्थायित्व, पुनर्पाठ और विस्तृत विश्लेषण इसकी विशेषताएँ हैं; साक्षरता और निश्चित प्रकाशन समय इसकी सीमाएँ हैं।

चरण 1: माध्यम की पहचान और उत्तर की योजना प्रश्न में आधुनिक जनसंचार माध्यम पूछा गया है, इसलिए उत्तर मुद्रित माध्यम होगा। पहले इसका नाम और उदाहरण देना चाहिए, फिर पाठक को मिलने वाली सुविधाएँ स्पष्ट करनी चाहिए। सबसे पुराना होने का अर्थ यह नहीं है कि मौखिक संचार मुद्रण के बाद आरंभ हुआ; यहाँ तुलना आधुनिक जनसंचार माध्यमों की है।

चरण 2: विशेषताओं का अर्थ समझें पुनर्पाठ का अर्थ है कि कठिन अंश को पाठक दोबारा पढ़ सकता है। संग्रह की सुविधा पुरानी सामग्री को बाद में संदर्भ बनाने देती है। दृश्य-श्रव्य प्रसारण की निर्धारित गति के विपरीत यहाँ पाठक स्वयं तय करता है कि किस समाचार को कितनी देर पढ़ना है। आदर्श उत्तर में इन्हीं बातों को संक्षिप्त रूप में रखना चाहिए।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम मुद्रित माध्यम है। समाचारपत्र और पत्रिकाएँ इसके प्रमुख रूप हैं। इनमें पाठक अपनी रुचि, सुविधा और समय के अनुसार सामग्री चुनकर पढ़ सकता है। सामग्री को बार-बार पढ़ना, सुरक्षित रखना और संदर्भ के रूप में उपयोग करना संभव है। इसमें समाचारों का विस्तृत विवरण तथा विश्लेषण दिया जा सकता है। भाषा, व्याकरण, वर्तनी और प्रस्तुति की शुद्धता आवश्यक होती है। इसकी पहुँच साक्षर पाठकों तक है और प्रकाशन के बाद तत्काल संशोधन संभव नहीं होता।

चरण 4: निष्कर्ष मुद्रित माध्यम सबसे पुराना आधुनिक जनसंचार माध्यम है। पाठक का पढ़ने की गति पर नियंत्रण, सामग्री का स्थायित्व और विस्तृत विश्लेषण इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर की शुरुआत में मुद्रित माध्यम लिखकर उदाहरण दें; फिर पुनर्पाठ, संग्रह और विस्तृत विश्लेषण जैसी अलग-अलग विशेषताएँ जोड़ें।

8(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए :

पत्रकारीय लेखन किसे कहते हैं ? पत्रकारों के विभिन्न प्रकारों का विस्तार से उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार, रिपोर्ट, लेख, साक्षात्कार और संपादकीय जैसी सामग्री का लेखन पत्रकारीय लेखन कहलाता है।
- काम और संस्था से संबंध के आधार पर पत्रकार पूर्णकालिक, अंशकालिक और स्वतंत्र होते हैं। इनका अंतर विषय की रुचि से नहीं, काम करने की व्यवस्था से स्पष्ट होता है।

चरण 1: परिभाषा और वर्गीकरण की योजना पहले पत्रकारीय लेखन का उद्देश्य और सामग्री के उदाहरण दें। इसके बाद पत्रकारों के तीनों प्रकारों में संस्था से संबंध, काम का स्वरूप और भुगतान का आधार बताएँ। केवल प्रकारों के नाम लिखने से उनका अंतर स्पष्ट नहीं होता। पूर्णकालिक पत्रकार की नियमित नियुक्ति, अंशकालिक पत्रकार का सीमित सहयोग और स्वतंत्र पत्रकार का अनेक संस्थाओं के लिए लेखन उत्तर के मुख्य बिंदु हैं।

चरण 2: प्रकारों के बीच अंतर समझें पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार-संगठन का नियमित कर्मचारी होता है। अंशकालिक पत्रकार किसी क्षेत्र या अवसर के समाचार भेजता है और उसे प्रायः सामग्री के अनुसार पारिश्रमिक मिलता है। स्वतंत्र पत्रकार किसी एक संस्था से बँधा नहीं होता। वह अपनी रुचि और विशेषज्ञता के अनुसार विभिन्न माध्यमों को सामग्री देता है। किसी खास विषय पर रिपोर्ट करना अपने-आप में इन तीन प्रकारों में से कोई नया प्रकार नहीं बनाता।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर समाचारपत्र, पत्रिका तथा अन्य जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार, रिपोर्ट, लेख आदि लिखना पत्रकारीय लेखन है। पत्रकार मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं। पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार-संगठन का नियमित वेतनभोगी कर्मचारी होता है। अंशकालिक पत्रकार किसी संस्था को समय-समय पर समाचार भेजता है और प्रायः प्रकाशित सामग्री के अनुसार पारिश्रमिक पाता है। स्वतंत्र पत्रकार किसी एक संस्था से बँधा नहीं होता; वह विभिन्न समाचारपत्रों और पत्रिकाओं के लिए लेखन करता है तथा स्वीकृत सामग्री के आधार पर भुगतान प्राप्त करता है।

चरण 4: निष्कर्ष पत्रकारीय लेखन जनसंचार माध्यमों के लिए किया जाने वाला लेखन है। संस्था से कार्य-संबंध के आधार पर पत्रकार पूर्णकालिक, अंशकालिक और स्वतंत्र कहलाते हैं।

त्वरित सुझाव: तीनों प्रकार याद करते समय नियमित कर्मचारी, समय-समय पर सहयोग और किसी एक संस्था से स्वतंत्र लेखन का क्रम अपनाएँ।

8(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए :

समाचार लेखन की शैली का विस्तार से वर्णन करते हुए लिखिए कि यह शैली समाचार-लेखन की मानक शैली कैसे बनी। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार का उद्देश्य पाठक तक घटना की आवश्यक जानकारी शीघ्र पहुँचाना है। उल्टा पिरामिड शैली में तथ्यों का क्रम समय के अनुसार नहीं, उनके महत्त्व के अनुसार रखा जाता है।
- समाचार के आरंभिक अनुच्छेद को मुखड़ा या इंट्रो कहते हैं। इसमें घटना का सार रहता है; उसके बाद विवरण और पृष्ठभूमि का स्थान आता है।

चरण 1: शैली के गठन और ऐतिहासिक कारण पहचानना उत्तर में पहले मुखड़े, फिर महत्त्वपूर्ण विवरण और अंत में कम आवश्यक सूचनाओं का क्रम बताना चाहिए। इसके बाद अमेरिकी गृहयुद्ध के समय तार सेवा के टूटने की आशंका से आवश्यक सूचना पहले भेजने की जरूरत समझानी चाहिए। पाठक और संपादक, दोनों के लिए उपयोगी होना इसके मानक बनने का कारण है। समाचार को नीचे से छोटा करने पर भी मुख्य तथ्य सुरक्षित रहते हैं। इस प्रकार स्थान की कमी होने पर पूरी खबर दोबारा लिखने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर समाचार-लेखन की मानक शैली उल्टा पिरामिड है। इसमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथ्य पहले, फिर महत्त्वपूर्ण विवरण और अंत में कम आवश्यक जानकारी दी जाती है। मुखड़े में घटना का सार रहता है; आगे उसका विस्तार तथा पृष्ठभूमि

आती है। अमेरिकी गृहयुद्ध के दौरान तार सेवा बाधित होने की आशंका से संवाददाता मुख्य सूचना पहले भेजते थे। इससे आवश्यक खबर सुरक्षित पहुँचती थी। पाठक को तुरंत सार मिलना और संपादक को नीचे से सामग्री काटने की सुविधा मिलना इस शैली के मानक बनने के प्रमुख कारण बने।

चरण 3: निष्कर्ष इस शैली में सूचना का क्रम घटते महत्त्व के अनुसार होता है। मुख्य समाचार पहले मिलना और उसके सार को क्षति पहुँचाए बिना संक्षेप कर पाना इसे व्यावहारिक मानक बनाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में घटते महत्त्व का क्रम, अमेरिकी गृहयुद्ध का संदर्भ और पाठक-संपादक की सुविधा अवश्य जोड़ें।

9(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए –
सर्दी की एक कँपकँपाती रात [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा अनुभव, संवेदनापूर्ण वर्णन और कल्पना का स्वाभाविक मेल होता है। दृश्य, ध्वनि और स्पर्श के बिंब पाठक को उस वातावरण का अनुभव कराते हैं।
- सर्दी की रात के वर्णन में केवल मौसम की जानकारी पर्याप्त नहीं है। किसी छोटी घटना के सहारे मानवीय संवेदना उभरने से लेख प्रभावपूर्ण बनता है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति तय करना पहले उपयुक्त शीर्षक दें। आरंभ में रात का वातावरण, बीच में कोई अनुभव और अंत में उससे उपजा भाव रखें। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए पत्र जैसा पता या संबोधन आवश्यक नहीं है। लगभग 120 शब्दों की सीमा के भीतर दृश्य को सजीव बनाना और घटनाओं को परस्पर जोड़ना मुख्य उद्देश्य है।

चरण 2: विषय की सामग्री और बिंब चुनना सूनी सड़क, धुँध में खोई बत्तियाँ, खिड़की पर दस्तक देती हवा और ठिठुरते हाथ रात के अनुभव को मूर्त बनाते हैं। कथावाचक की गरम रजाई के साथ बाहर बैठे चौकीदार की दशा जोड़ने से वर्णन में सामाजिक संवेदना आती है। गरम चाय देने जैसी छोटी क्रिया कथा को सहज पूर्णता देती है। भाषा सरल रखें और उपदेश के स्थान पर अनुभव से भाव प्रकट होने दें।

चरण 3: पूरा रचनात्मक लेख **सर्दी की एक कँपकँपाती रात**

रात के दस बज चुके थे। कोहरे ने सड़क को सफेद चादर में लपेट लिया था। खिड़की की दरारों से आती हवा सुइयों की तरह चुभ रही थी। मैं रजाई में दुबका था कि बाहर खाँसने की आवाज आई। दरवाजा खोला तो चौकीदार रामू काका ठिठुरते दिखाई दिए। उनका पतला स्वेटर ठंड से हार चुका था। मैं रसोई से गरम चाय और अलमारी से एक कंबल ले आया। कंबल ओढ़ते ही उनके चेहरे पर मुसकान खिल उठी। चाय के प्याले से उठती भाप में जैसे थोड़ी धूप उतर आई थी। लौटकर रजाई में बैठा तो ठंड कम लग रही थी। उस रात समझ आया कि किसी की मदद से मन में भी गरमाहट भर जाती है।

चरण 4: निष्कर्ष लेख में सर्दी का सजीव वातावरण, एक छोटी घटना और सहायता से उपजी आत्मीयता क्रमशः उभरती है। शीर्षक तथा लगभग 120 शब्दों का मुख्य लेख प्रश्न की अपेक्षा पूरी करते हैं।

त्वरित सुझाव: मौसम का वर्णन लिखते समय दो-तीन ठोस बिंब चुनें और किसी छोटी घटना से भावपूर्ण अंत जोड़ें।

9(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए –
जब पिताजी की पदोन्नति हुई [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में किसी अनुभव को दृश्य, संवाद और भावों के माध्यम से जीवंत बनाया जाता है। विषय के केंद्र में पिताजी की पदोन्नति का समाचार और परिवार पर उसका प्रभाव रहना चाहिए।
- प्रथम पुरुष में लिखा गया छोटा संस्मरण इस विषय के लिए उपयुक्त है। आरंभ में घटना, मध्य में प्रतिक्रिया और अंत में अनुभव से मिली सीख रखने पर लेख सुसंगत बनता है।

चरण 1: घटना और प्रस्तुति की योजना लेख का शीर्षक विषय के अनुरूप रखें। पिताजी के घर लौटने से घटना शुरू करें; उनके चेहरे, समाचार सुनकर परिवार की प्रतिक्रिया और छोटे उत्सव का चित्र प्रस्तुत करें। परिवार की प्रसन्नता के साथ पिताजी के लंबे परिश्रम का उल्लेख भी आए। इससे पदोन्नति केवल आर्थिक लाभ की घटना न रहकर साझा संघर्ष की सफलता बनती है। रचनात्मक लेख के लिए पत्र का पता, संबोधन अथवा औपचारिक समापन आवश्यक नहीं है।

चरण 2: भाव और भाषा का चयन सरल, आत्मीय भाषा में उत्सुकता से प्रसन्नता तक भावों का क्रम रखें। एक छोटा संवाद व्यक्तित्व उभार सकता है। भव्य समारोह या असंबद्ध विवरण जोड़ने के बजाय घर के परिचित वातावरण पर ध्यान दें। अंतिम विचार घटना से स्वाभाविक रूप से निकले। नीचे लगभग 120 शब्दों का मॉडल लेख दिया गया है; शीर्षक के बाद का पूरा अनुच्छेद उत्तर के रूप में लिखा जा सकता है।

चरण 3: पूर्ण रचनात्मक लेख **जब पिताजी की पदोन्नति हुई**

उस शाम पिताजी के चेहरे पर अनोखी चमक थी। दरवाजे से भीतर आते ही उन्होंने माँ को एक लिफाफा थमाया। माँ ने पढ़ा तो खुशी से बोल उठीं, “आखिर आपकी मेहनत रंग लाई!” पिताजी की पदोन्नति हो गई थी। मैं और छोटी बहन उनसे लिपट गए। वर्षों से उन्हें देर रात तक काम करते देखा था; आज उस परिश्रम को पहचान मिली थी। माँ ने झटपट हलवा बनाया और हमने दादी को फोन किया। मुझे लगा, अब पिताजी का सारा बोझ हल्का हो जाएगा। उन्होंने मुसकराकर कहा, “बड़ा पद बड़ी जिम्मेदारी भी लाता है।” उनकी बात सुनकर मेरी खुशी में गर्व जुड़ गया। उस छोटे उत्सव ने सिखाया कि सफलता का सबसे सुंदर स्वाद अपनों के साथ बाँटने में है।

चरण 4: निष्कर्ष इस लेख में पदोन्नति के समाचार से उत्पन्न पारिवारिक उल्लास, पिताजी के परिश्रम के प्रति सम्मान और जिम्मेदारी की समझ को एक आत्मीय घटना में पिरोया गया है।

त्वरित सुझाव: समाचार, परिवार की प्रतिक्रिया और पिताजी का एक छोटा संवाद जोड़कर विषय को जीवंत बनाएँ; केवल पदोन्नति के लाभ न गिनाएँ।

9(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए –
दिनोंदिन गिरता भू-जल स्तर [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पर्यावरण संबंधी रचनात्मक लेख में समस्या की जानकारी के साथ मानवीय संवेदना भी आवश्यक है। घटते भूजल को किसी परिचित दृश्य से जोड़ने पर पाठक उसका अपने जीवन से संबंध समझता है।
- लेख का विकास दृश्य, कारण, परिणाम और समाधान के क्रम में किया जा सकता है। सरल भाषा और सीमित बिंब विषय को प्रभावशाली बनाते हैं; अप्रमाणित आँकड़ों की आवश्यकता नहीं है।

चरण 1: लेख की रूपरेखा तैयार करना शीर्षक के बाद सूखे हैंडपंप अथवा गहराते कुएँ का दृश्य प्रस्तुत करें। फिर अत्यधिक दोहन, वर्षाजल की बर्बादी और कंक्रीट के फैलाव जैसे कारणों की चर्चा करें। पेयजल और खेती पर संकट का संकेत देते हुए वर्षाजल संचयन तथा विवेकपूर्ण उपयोग तक पहुँचें। रचनात्मक लेख में केवल नारे लिखना पर्याप्त नहीं है; विचारों को एक प्रवाहपूर्ण अनुभव का रूप देना

चाहिए।

चरण 2: अभिव्यक्ति और संतुलन आरंभ का दृश्य पाठक का ध्यान खींचे और अंतिम पंक्ति उसमें जिम्मेदारी का भाव जगाए। कारणों की लंबी सूची से बचते हुए समस्या तथा उपाय दोनों को स्थान दें। भूजल को अदृश्य बचत की तरह समझाने वाला बिंब उपयोगी है, लेकिन वैज्ञानिक तथ्य स्पष्ट रहें। नीचे लगभग 120 शब्दों का पूरा मॉडल उत्तर है। इसे पत्र या प्रतिवेदन का रूप देने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 3: पूर्ण रचनात्मक लेख **दिनोंदिन गिरता भूजल स्तर**

गाँव का पुराना हैंडपंप अब पानी की जगह लंबी कराह निकालता है। दादी बताती हैं कि कभी थोड़ी खुदाई में पानी मिल जाता था। आज गहरे होते नलकूप हमारी बढ़ती प्यास और घटती समझ की कहानी कहते हैं। खेतों में अंधाधुंध सिंचाई, घरों में पानी की बर्बादी और कंक्रीट से ढकी जमीन ने धरती की जलभरी गुल्लक खाली कर दी है। बरसात का पानी मिट्टी में उतरने के बजाय नालियों में बह जाता है। इसका संकट केवल किसान का नहीं; आने वाली पीढ़ियों का भी है। हमें वर्षाजल संचयन अपनाना होगा, तालाब बचाने होंगे और पानी का विवेकपूर्ण उपयोग करना होगा। धरती से केवल लेते रहने की आदत बदलनी होगी। आज बचाई गई हर बूँद कल की प्यास बुझाने की आशा है।

चरण 4: निष्कर्ष लेख में सूखे हैंडपंप के दृश्य के माध्यम से घटते भूजल का संकट उभरता है और वर्षाजल संचयन, जलस्रोतों की रक्षा तथा संयमित उपयोग की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

त्वरित सुझाव: आरंभ में पानी की कमी का एक ठोस दृश्य रखें और अंत में उसी संकट से जुड़े व्यावहारिक उपाय दें, जिससे लेख में एकता बनी रहे।

9(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए –
स्वप्न में प्रिय अभिनेता/अभिनेत्री से भेंट [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वप्न पर आधारित रचनात्मक लेख में कल्पना, व्यक्तिगत अनुभूति और घटनाओं का क्रमिक विकास प्रमुख होता है। विषय के केंद्र में प्रिय कलाकार से अप्रत्याशित भेंट रहनी चाहिए।
- शीर्षक के बाद लगभग 120 शब्दों में वातावरण, संवाद, भावनात्मक प्रतिक्रिया और स्वप्न टूटने का प्रसंग प्रस्तुत किया जा सकता है। भाषा सहज, चित्रात्मक और मौलिक होनी चाहिए।

चरण 1: रूपरेखा और कथावस्तु लेख का आरंभ रात में फिल्म देखने से करें। फिर स्वप्न में प्रिय अभिनेता से भेंट, उसके व्यवहार और प्रेरक संवाद का चित्रण करें। अंत में नींद खुलने की घटना को जोड़कर स्वप्न और वास्तविकता का संबंध स्पष्ट करें। अनावश्यक जीवन-परिचय देने के स्थान पर अपने अनुभव को केंद्र में रखें। संवाद छोटा और पात्र के व्यक्तित्व के अनुकूल हो। कल्पित घटना को वास्तविक साक्षात्कार का दावा न बनाएँ; नींद खुलने का स्वाभाविक संकेत देकर कथानक पूरा करें।

चरण 2: पूर्ण रचनात्मक लेख **सपनों की वह यादगार मुलाकात**

कल रात अपनी प्रिय फिल्म देखते-देखते मुझे नींद आ गई। अचानक मैंने स्वयं को एक फिल्म के विशाल सेट पर पाया। सामने मेरे प्रिय अभिनेता अमिताभ बच्चन खड़े थे। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। मैंने झिझकते हुए नमस्कार किया तो उन्होंने मुसकराकर मुझे अपने पास बुलाया। उनकी आत्मीयता देखकर मेरा संकोच मिट गया। मैंने पूछा, 'आपकी सफलता का रहस्य क्या है?' उन्होंने कहा, 'नियमित अभ्यास करो और असफलता से कभी मत घबराओ।' हमने साथ तस्वीर भी खिंचवाई। तभी तालियों जैसी आवाज सुनाई दी। वास्तव में माँ मुझे जगाने के लिए दरवाजा खटखटा रही थीं। आँख खुली तो सेट गायब था। वह भेंट स्वप्न थी, लेकिन उससे मिला परिश्रम का संदेश मेरे मन में सदा के लिए बस गया।

चरण 3: निष्कर्ष इस रचनात्मक लेख में स्वप्निल भेंट की खुशी, कलाकार की आत्मीयता और उससे मिली प्रेरणा को घटनाक्रम के माध्यम से व्यक्त किया गया है।

त्वरित सुझाव: स्वप्न वाले विषय में अंत में कोई वास्तविक आवाज या घटना जोड़ें, जिससे नींद खुलने का प्रसंग सहज और प्रभावी बने।

10(क). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए –

'लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप' प्रसंग ईश्वरीय राम का पूरी तरह से मानवीकरण है। सिद्ध कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास ने लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम के शोक के माध्यम से उनके सहज मानवीय रूप और गहरे भ्रातृप्रेम को उभारा है।
- मानवीकरण का प्रमाण राम का दुःख, पश्चात्ताप, असहायता और पारिवारिक संबंधों की चिंता है। उत्तर में ईश्वरीय शक्ति का सामान्य उल्लेख करने की अपेक्षा प्रसंग की प्रतिक्रियाएँ दिखानी चाहिए।

चरण 1: प्रसंग के आधार पर भाव पहचानना राम को आशंका होती है कि लक्ष्मण उन्हें छोड़कर चले जाएँगे। वे उन्हें संबोधित करके विलाप करते हैं तथा उनके बिना अपना जीवन असह्य मानते हैं। वन में भाई को साथ लाने पर पश्चात्ताप और माता सुमित्रा को उत्तर देने की चिंता किसी व्यथित मनुष्य की स्वाभाविक प्रतिक्रियाएँ हैं। वे सर्वज्ञ देवता के समान निष्प्रभावी नहीं रहते, बल्कि संबंध-विच्छेद की आशंका से दुखी भाई की तरह बोलते हैं।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम सामान्य मनुष्य की तरह व्याकुल होकर विलाप करते हैं। वे भाई के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर पाते और उन्हें वन लाने पर पछताते हैं। माता सुमित्रा को क्या उत्तर देंगे, यह चिंता भी उन्हें सताती है। उनका भ्रातृप्रेम, असहायता और आत्मग्लानि ईश्वरीय स्वरूप को पीछे छोड़कर अत्यंत संवेदनशील मानवीय रूप प्रकट करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लक्ष्मण के प्रति स्नेह और वियोग की आशंका से उत्पन्न करुण विलाप राम के पूर्ण मानवीकरण का प्रमाण है।

त्वरित सुझाव: मानवीकरण सिद्ध करने के लिए राम की व्याकुलता, पश्चात्ताप और सुमित्रा की चिंता जैसे ठोस प्रसंग चुनें।

10(ख). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए –

कविता की उड़ान को फूलों के समान बताते हुए भी कवि ने यह क्यों कहा है कि कविता का खिलना फूल क्या जाने ? 'कविता के बहाने' के संदर्भ में लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में फूल कविता के सौंदर्य और खिलने का बिंब है, पर कविता की सृजनात्मक संभावनाएँ फूल की प्राकृतिक सीमाओं से आगे जाती हैं।
- तुलना का साझा आधार सौंदर्य और आनंद है; भिन्नता समय, स्थान तथा प्रभाव की सीमा में है। प्रश्न में उड़ान का उल्लेख होने पर भी उत्तर का केंद्र कविता और फूल के खिलने का अंतर है।

चरण 1: समानता और अंतर स्पष्ट करना फूल खिलकर वातावरण को सुंदर बनाता है, वैसे ही कविता मन में आनंद और संवेदना जगाती है। किंतु फूल का जीवन सीमित है और वह मुरझा जाता है। कविता का भाव और अर्थ पढ़ने वालों के अनुभव में बार-बार नया रूप पाता है तथा विभिन्न समयों और स्थानों तक पहुँचता है। इसीलिए फूल कविता के असीम खिलने को पूरी तरह नहीं समझ सकता। यहाँ फूल को छोटा दिखाना उद्देश्य नहीं है; उसके माध्यम से कविता की व्यापकता, कल्पनाशीलता और स्थायी प्रभाव की पहचान कराई गई है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर फूल और कविता दोनों सौंदर्य तथा आनंद का प्रसार करते हैं। किंतु फूल का खिलना सीमित समय और स्थान तक रहता है; वह अंततः मुरझा जाता है। कविता का सौंदर्य समय और स्थान की सीमाएँ पार करता है। उसके भाव और अर्थ पाठकों के मन में निरंतर नए रूप में खिलते हैं। इसलिए फूल कविता के असीम, अमर खिलने को नहीं जान सकता।

चरण 3: निष्कर्ष फूल का खिलना प्राकृतिक और सीमित है, जबकि कविता का खिलना कल्पना, अर्थ और संवेदना के असीम विस्तार का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: फूल और कविता की तुलना में पहले समान सौंदर्य बताएँ, फिर कविता की समय और स्थान से परे पहुँच स्पष्ट करें।

10(ग). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए –

'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के संदर्भ में बताइए कि शारीरिक चुनौती झेल रहे व्यक्ति को पर्दे पर दिखाने के पीछे मीडिया कर्मियों का क्या उद्देश्य था ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता दुख के प्रदर्शन और वास्तविक मानवीय संवेदना का अंतर उजागर करती है।
- संचालक की सहानुभूति के पीछे पीड़ा को बिकाऊ दृश्य में बदलने की प्रवृत्ति छिपी है।

चरण 1: उद्देश्य पहचानिए कार्यक्रम बनाने वाले व्यक्ति की समस्या समझकर उसका समाधान नहीं करना चाहते। वे ऐसे प्रश्न पूछते हैं जिनसे शारीरिक चुनौती झेल रहा व्यक्ति अपनी विवशता अनुभव करे और कैमरे के सामने भावुक हो उठे। उसकी यातना को कार्यक्रम की सफलता का साधन बनाया जाता है।

चरण 2: काव्य-प्रसंग से पुष्टि कीजिए बार-बार दुख पूछना और रोने की प्रतीक्षा करना उनकी बनावटी करुणा को उजागर करता है। वे पीड़ित और दर्शक दोनों को एक साथ रुलाना चाहते हैं। इस प्रकार उसकी स्वतंत्र गरिमा और इच्छा की उपेक्षा करके उसकी व्यथा का दृश्यात्मक तमाशा तैयार किया जाता है। दर्शकों में क्षणिक करुणा जगाना वास्तविक सहानुभूति का प्रमाण नहीं है। पीड़ित को बराबरी के मनुष्य की तरह सुनने के बजाय उसकी लाचारी को कैमरे में कैद करने की इच्छा ही इस कार्यक्रम का नैतिक दोष है।

चरण 3: निष्कर्ष मीडिया कर्मियों का उद्देश्य शारीरिक चुनौती झेल रहे व्यक्ति की सहायता करना नहीं, उसके दुख को रोचक और करुण दृश्य बनाना था। वे उसे असहज प्रश्नों से रुलाकर दर्शकों को भी भावुक करना चाहते थे। उसकी पीड़ा का प्रदर्शन कार्यक्रम को प्रभावशाली तथा लोकप्रिय बनाने का साधन था। कविता इसी व्यावसायिक दृष्टि और अमानवीय संवेदनहीनता पर व्यंग्य करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दिखावटी करुणा, पीड़ा का प्रदर्शन और कार्यक्रम की लोकप्रियता को जोड़िए; सहायता को वास्तविक उद्देश्य न बताइए।

11(क). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए –

बात और शरारती बच्चे के बीच की समानता 'बात सीधी थी पर' शीर्षक कविता के संदर्भ में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में बात अर्थ तथा भाषा उसकी अभिव्यक्ति का माध्यम है।
- शरारती बच्चे का बिंब सहजता और बलपूर्वक नियंत्रण के विरोध को स्पष्ट करता है।

चरण 1: तुलना का आधार समझिए बात कवि के साथ शरारती बच्चे की तरह खेलती है। वह सहज रूप से व्यक्त हो सकती थी, किंतु कवि उसे भाषा के चमत्कार से वश में करने की कोशिश करता है। जैसे बच्चा पकड़ में आने से बचता है, वैसे ही बात का आशय हाथ से निकलने लगता है।

चरण 2: कवि की भूल पहचानिए कवि शब्दों की पेचीदगी में उलझकर बात को कठिन बना देता है। सहज अर्थ के स्थान पर बनावटी प्रभाव की चिंता बढ़ जाती है। तुलना बच्चे के वास्तविक उपद्रव की नहीं, बात की चंचलता और अभिव्यक्ति के कृत्रिम नियंत्रण से उसके बिगड़ने की है।

चरण 3: निष्कर्ष जैसे शरारती बच्चा सहज खेलता है और बलपूर्वक पकड़ने पर वश में नहीं आता, वैसे ही बात भी कवि के साथ खेलती है। कवि उसे शब्दों के चमत्कार में बाँधना चाहता है; इससे उसकी सहजता नष्ट होती है और अर्थ उलझ जाता है।

त्वरित सुझाव: शरारती बच्चे की चंचलता को बात की सहजता से जोड़िए और भाषा के अनावश्यक चमत्कार का परिणाम बताइए।

11(ख). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए –

शरदकालीन सुबह की तुलना किससे और किस आधार पर की गई है ? 'पतंग' कविता के आधार पर लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलोक धन्वा की कविता में शरद की सुबह रंग, चमक और ताजगी के माध्यम से सजीव बनती है।
- उपमा में खरगोश की आँखें उपमान हैं और सुबह का आकाश उपमेय है।

चरण 1: उपमान पहचानिए कवि ने शरदकालीन सुबह की तुलना खरगोश की आँखों से की है। यहाँ तुलना का संबंध सुबह के रंग और उसकी कोमल चमक से है। खरगोश की आँखों का उल्लेख किसी भय या उदासी को व्यक्त करने के लिए नहीं आया है।

चरण 2: समान गुण स्पष्ट कीजिए सूर्योदय के समय आकाश में दिखाई देने वाली लालिमा खरगोश की लाल आँखों की याद दिलाती है। सुबह की उजली, कोमल ताजगी इस दृश्य को आकर्षक बनाती है। इस बिंब में बालसुलभ जीवंतता और नए दिन के स्वागत का उत्साह भी अनुभव होता है। यह तुलना सुबह की दृश्यात्मक सुंदरता को मूर्त रूप देती है।

चरण 3: निष्कर्ष शरदकालीन सुबह की तुलना खरगोश की आँखों से की गई है। सूर्योदय के समय सुबह का आकाश खरगोश की आँखों की तरह लाल और चमकीला दिखाई देता है। रंग की समानता तथा कोमल उजास इस सुंदर, ताजगी भरे बिंब का आधार हैं।

त्वरित सुझाव: उपमान के साथ समान गुण अवश्य लिखिए: खरगोश की आँखें और शरद की सुबह, दोनों की लालिमा तथा चमक।

11(ग). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए –

'आत्मपरिचय' शीर्षक कविता में कवि की संग्रह के प्रति क्या धारणा है ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंश राय बच्चन बाहरी उपलब्धियों की अपेक्षा मन की स्वतंत्रता और प्रेम को महत्त्व देते हैं।
- संचय के पीछे भागना तथा जगत से स्थायी सुख पाना कविता में प्रश्नांकित हैं।

चरण 1: कवि का प्रश्न समझिए कवि पूछता है कि जिस संसार में लोग संचय के पीछे लगे हैं, वहाँ संचय करके किसे स्थायी सुख मिला है। यह प्रश्न बाहरी धन-संपत्ति को सुख की अंतिम कसौटी मानने का खंडन करता है। संसार की संग्रह-वृत्ति उसे आकर्षित नहीं करती।

चरण 2: धारणा का आशय स्पष्ट कीजिए कवि अपनी भाव-संपन्नता तथा स्वतंत्र जीवन-दृष्टि को प्राथमिकता देता है। वह सांसारिक संग्रह को जीवन का लक्ष्य नहीं मानता। उत्तर में संग्रह का अर्थ केवल पुस्तकों या सूचनाओं का संकलन करना नहीं, भौतिक उपलब्धियों के संचय में सुख खोजना है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि संग्रह को स्थायी सुख का साधन नहीं मानता। संसार धन-संपत्ति जोड़ने में लगा है, किंतु इस संचय से सच्चा संतोष नहीं मिलता। इसलिए वह संग्रह की होड़ से दूर रहकर प्रेम, मन की स्वतंत्रता और अपनी आंतरिक अनुभूतियों को महत्त्व देता है।

त्वरित सुझाव: संग्रह को धन-संपत्ति के संचय से जोड़िए; कवि की प्राथमिकता प्रेम तथा आंतरिक संतोष है।

12(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए –

'शिरीष के फूल' पाठ में लेखक ने शिरीष, अवधूत और गांधी जी को एक ही श्रेणी में क्यों रखा है ? पाठ के अनुसार इस समानता का आधार स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंध में शिरीष प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जीवन-रस बनाए रखने का प्रतीक है।
- अवधूत की अनासक्ति पलायन नहीं, परिस्थितियों से ऊपर उठकर लोकहित में जीने की क्षमता है।

चरण 1: शिरीष और अवधूत की समानता बताइए शिरीष भीषण गर्मी में भी फूलता है और अपनी सरसता बनाए रखता है। अवधूत सांसारिक मोह, लोभ तथा सुख-दुख से निर्लिप्त रहकर मस्त रहता है। दोनों बाहरी कठिनाइयों से पराजित नहीं होते और अपनी सहज प्रकृति तथा आंतरिक आनंद को सुरक्षित रखते हैं।

चरण 2: गांधी जी से संबंध स्पष्ट कीजिए गांधी जी हिंसा, अशांति और घृणा के बीच भी सत्य, अहिंसा तथा करुणा पर अडिग रहे। कठिन परिस्थितियाँ उन्हें लोकमंगल से विमुख नहीं कर सकीं। उनका मानसिक संतुलन और प्रेम शिरीष की विपरीत मौसम में खिलने की क्षमता तथा अवधूत की निर्लिप्तता के समान है। यह समानता केवल सहनशीलता की नहीं, कठिनाई के बीच भी सकारात्मक जीवन-मूल्य बचाए रखने की है। शिरीष की जीवंतता, अवधूत की मस्ती और गांधी जी की करुणा परिस्थितियों पर उनकी आंतरिक विजय दिखाती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष भीषण गर्मी में भी खिलकर सरस बना रहता है। अवधूत सांसारिक मोह तथा सुख-दुख से निर्लिप्त होकर मस्त रहता है। गांधी जी ने भी हिंसा और अशांति के बीच सत्य, अहिंसा तथा प्रेम नहीं छोड़ा। प्रतिकूल परिस्थितियों में अडिग रहना, अनासक्ति बनाए रखना और जीवन में करुणा तथा सरसता बचाए रखना तीनों की समानता का आधार है।

त्वरित सुझाव: तीनों के उदाहरण अलग-अलग दीजिए, फिर प्रतिकूलता में अनासक्ति और अडिग जीवन-दृष्टि को समान आधार बताइए।

12(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए –

'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर राज पहलवान होने पर भी लुट्टन की दुर्गति का कारण क्या था ? लुट्टन के जीवन में आया यह परिवर्तन किस ओर संकेत करता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लुट्टन की स्थिति को राजाश्रय और बदलते सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में समझना आवश्यक है।
- कथा में राजाश्रय का अंत लोककला और उसके कलाकार की आजीविका पर सीधा प्रभाव डालता है।

चरण 1: राजाश्रय समाप्त होने का कारण श्यामनगर के राजा साहब लुट्टन की कुश्ती और उसकी प्रतिभा के प्रशंसक थे। उन्होंने उसे राज पहलवान बनाया था। राजा की मृत्यु के बाद विलायत से लौटे राजकुमार ने शासन सँभाला। उसकी रुचि कुश्ती के स्थान पर घुड़दौड़ और आधुनिक मनोरंजन में थी। उसने पहलवान और उसके बेटों पर होने वाले खर्च को व्यर्थ मानकर उन्हें निकाल दिया।

चरण 2: परिवर्तन का सामाजिक संकेत दरबार से निष्कासित लुट्टन गाँव लौटा और अभावों में जीने लगा। उसका कौशल बना रहा, पर संरक्षण और नियमित आय छिन गए। यह परिवर्तन सामंती आश्रय पर निर्भर लोककलाओं की असुरक्षा तथा नए शासक वर्ग की देशी खेलों के प्रति उपेक्षा का संकेत है। कलाकार की प्रतिभा के बजाय आश्रयदाता की रुचि उसका भविष्य तय करने लगी। इसलिए लुट्टन की दुर्गति उसकी प्रतिभा घटने से नहीं, संरक्षण देने वाली व्यवस्था बदलने से हुई।

चरण 3: निष्कर्ष राजा की मृत्यु के बाद नए राजकुमार की रुचि कुश्ती में नहीं, घुड़दौड़ में थी। उसने लुट्टन और उसके बेटों को अनावश्यक खर्च मानकर निकाल दिया। राजाश्रय छिनने से राज पहलवान लुट्टन निर्धन हो गया। यह परिवर्तन बदलती अभिरुचियों, देशी खेलों की उपेक्षा और आश्रित लोककलाकारों की असुरक्षित आजीविका की ओर संकेत करता है।

त्वरित सुझाव: राजा की मृत्यु, राजकुमार की नई रुचि और लोककला की उपेक्षा को कारण-परिणाम के क्रम में जोड़िए।

12(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए –

'काले मेघा पानी दे' पाठ में बारिश करवाने के लिए कौन सा अंतिम उपाय किया जाता है ? लेखक इसके लिए क्यों तैयार नहीं होता और जीजी किन तर्कों से इसे सही ठहराती हैं ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में लेखक का तर्कशील दृष्टिकोण और जीजी की लोकआस्था आमने-सामने आते हैं।
- जीजी पानी देने को त्याग, दान और सामूहिक कल्याण के भाव से जोड़ती हैं।

चरण 1: बारिश बुलाने का अंतिम उपाय अनावृष्टि में इंदर सेना के लड़के घर-घर जाकर पानी माँगते हैं। लोग उनके ऊपर पानी उँडेलते हैं और वे कीचड़ में लोटकर मेघों से वर्षा की प्रार्थना करते हैं। वर्षा के लिए लोकविश्वास पर आधारित इस उपाय में पानी की कमी के बीच भी पानी दिया जाता है। लेखक को इसी पानी का व्यर्थ बहना खटकता है।

चरण 2: लेखक की आपत्ति और जीजी के तर्क लेखक मानता है कि जब पीने के लिए पानी नहीं है, तब इस प्रकार उसे बहाना निरर्थक है। जीजी समझाती हैं कि दान वही सार्थक है जिसमें अपनी कमी के बीच भी त्याग हो। जैसे किसान अधिक अन्न पाने के लिए बीज धरती में डालता है, वैसे ही पानी देना वर्षा की आशा और इंद्र को जल का अर्घ्य देने का भाव है। यह जीजी का आस्था-आधारित तर्क है। वे इंदर सेना की पुकार में लोगों के सामूहिक विश्वास और दूसरों के लिए कुछ देने की भावना देखती हैं; लेखक इसे व्यावहारिक उपयोगिता की कसौटी पर परखता है।

चरण 3: निष्कर्ष बारिश के लिए इंदर सेना पर पानी उँडेला जाता है और लड़के कीचड़ में लोटकर वर्षा की प्रार्थना करते हैं। लेखक पानी की कमी के समय इस बरबादी का विरोध करता है। जीजी इसे त्याग और दान बताती हैं। उनके अनुसार किसान भी फसल पाने के लिए बीज देता है; उसी तरह इंद्र को जल का अर्घ्य देकर वर्षा माँगी जाती है।

त्वरित सुझाव: लेखक की आपत्ति को पानी की कमी से और जीजी के समर्थन को त्याग तथा बीज बोने के उदाहरण से जोड़िए।

13(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए –

'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर लिखिए कि बाज़ार की कृतार्थता किसमें है ? इसे कृतार्थता कैसे लोग प्रदान करते हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार की उपयोगिता मनुष्य की वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति में है।
- निश्चित आवश्यकता और संयम के साथ खरीदने वाला ग्राहक बाज़ार को सार्थक बनाता है।

चरण 1: कृतार्थता का अर्थ बाज़ार वस्तुओं के विनिमय और आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध कराने का माध्यम है। उसकी सफलता केवल अधिक सामान बिकने या ग्राहक की जेब खाली होने में नहीं है। जब मनुष्य उससे अपने जीवन की वास्तविक आवश्यकता पूरी करता है, तब बाज़ार अपना उचित उद्देश्य पूरा करता है।

चरण 2: उचित ग्राहक की भूमिका जो अपनी जरूरत पहचानते हैं और आकर्षण में पड़कर अनावश्यक चीजें नहीं खरीदते, वे बाज़ार को कृतार्थता देते हैं। भगत जी इसका उदाहरण हैं। बाजार की चमक उन्हें विचलित नहीं करती; वे अपनी जरूरत का सामान लेकर लौटते हैं। उनका विवेक बाज़ार को लोभ का साधन बनने से रोकता है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार की कृतार्थता मनुष्य की वास्तविक आवश्यकताओं को पूरा करने में है। इसे वे लोग कृतार्थता देते हैं जो अपनी जरूरत जानते हैं और आकर्षण से विचलित हुए बिना आवश्यक वस्तुएँ खरीदते हैं। पाठ में भगत जी ऐसे विवेकशील ग्राहक हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में बाज़ार का उद्देश्य और भगत जी जैसे ग्राहक का संयम, दोनों अवश्य बताइए।

13(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए –
कारागार के नाम से भी डरने वाली भक्तिन लाट साहब से लड़ने के लिए क्यों तैयार हो गई थी ? 'भक्तिन' पाठ के संदर्भ में लिखिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन के व्यवहार का आधार महादेवी के प्रति अटूट स्नेह और सेवाभाव है।
- चरित्र की व्याख्या में उसके भय और स्वामिनी के लिए जोखिम उठाने की तत्परता को जोड़ना चाहिए।

चरण 1: कारागार का भय और अलगाव की आशंका भक्तिन सामान्यतः जेल के नाम से घबराती थी। लेकिन महादेवी के जेल जाने की संभावना पर उसे उनसे अलग होने की चिंता अधिक सताने लगी। वह स्वामिनी को अकेले कठिनाई झेलने देने के लिए तैयार नहीं थी और जेल में भी उनके साथ रहकर सेवा करना चाहती थी।

चरण 2: लाट साहब से लड़ने की तत्परता यदि जेल के नियम उसके साथ जाने में बाधक बनते, तो भक्तिन बड़े अधिकारी तक से विरोध करने को तैयार थी। यह व्यक्तिगत साहस दिखाने का दावा नहीं, स्वामिनी के प्रति उसकी निष्ठा का परिणाम था। प्रेम और सेवा की भावना ने उसके कारागार-संबंधी भय को पीछे छोड़ दिया था।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन महादेवी से अलग नहीं रहना चाहती थी। उनके जेल जाने पर वह भी साथ जाकर उनकी सेवा करना चाहती थी। साथ जाने से रोके जाने पर लाट साहब से लड़ने की उसकी तत्परता स्वामिनी के प्रति उसके गहरे स्नेह और अटूट निष्ठा का प्रमाण थी।

त्वरित सुझाव: भक्तिन की निर्भीकता का कारण राजनीतिक विरोध नहीं, महादेवी के साथ रहकर सेवा करने की इच्छा है।

13(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए –
'शिरीष के फूल' पाठ के आधार पर लिखिए कि काल के देवता की मार से बचने का क्या उपाय है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष विपरीत परिस्थितियों में भी जीवंतता और मस्ती बनाए रखने का प्रतीक है।
- काल की मार से बचने का आशय परिवर्तन स्वीकार कर जीवन को गतिशील बनाए रखना है।

चरण 1: जड़ता का संकट लेखक शिरीष के पुराने कठोर फलों के माध्यम से चिपके रहने की प्रवृत्ति की ओर ध्यान दिलाता है। जो समय बदलने पर भी अपना स्थान छोड़ना नहीं चाहते, उन्हें नई कोंपलें अंततः हटा देती हैं। इससे स्पष्ट है कि जड़ता और परिवर्तन का विरोध जीवन का संरक्षण नहीं कर सकते।

चरण 2: गतिशील जीवन का उपाय काल के देवता की मार से बचने का उपाय निरंतर गतिशील रहना है। परिस्थितियों के अनुरूप बदलते हुए कर्म और सृजन में लगे रहना चाहिए। शिरीष की तरह कठिन समय में भी सरसता और अनासक्ति बनाए रखने से मनुष्य जीवन की गति में सहभागी बनता है। ठहराव उसे अप्रासंगिक बना देता है।

चरण 3: निष्कर्ष काल के देवता की मार से बचने का उपाय निरंतर गतिशील रहना है। मनुष्य को जड़ता छोड़कर समय के साथ बदलना, कर्म करना और नई परिस्थितियाँ स्वीकार करनी चाहिए। शिरीष की तरह प्रतिकूलता में भी जीवंतता, सरसता और अनासक्ति बनाए रखना आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: काल की मार वाले प्रश्न में केंद्रीय शब्द गतिशीलता है; उसे परिवर्तन स्वीकार करने के विचार से स्पष्ट कीजिए।